# शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय, वाड्रफनगर

जिला - बलरामपुर-रामानुजगंज (छ.ग.)

वार्षिक पत्रिका

# अभ्युदय 2020

सत्र 2019-2020

अंक - प्रथम

वार्षिक पत्रिका

# अभ्युदय 2020

**संरक्षक**
डॉ. पी.आर. कोसरिया
प्राचार्य

**संपादक**
श्री एस. के. सिंह

**संयोजक**
श्री एस.के. पटेल

**सम्पादकीय सदस्य**
डॉ. तोयज शुक्ला
श्री पंकज कुमार

**छात्र सदस्य**
श्री प्रिन्स कुमार सोनी

**प्रकाशन प्रकोष्ठ**
शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय, वाड्रफनगर
बलरामपुर (छ.ग.)
www.govtcollegewadrafnagar.ac.in

**उमेश पटेल**
मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
उच्च शिक्षा, कौशल विकास,
तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार,
विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण विभाग

मंत्रालय कक्ष क्रमांक - एम1-12
महानदी भवन, नवा रायपुर, अटल नगर, रायपुर 4972002 (छ.ग.)
फोन : 0771-2510316, 2221316
नि.: डी-1/2, शासकीय आवासीय परिसर, देवेन्द्र नगर, रायपुर
फोन : 0771-2881030
ग्राम व पोस्ट नंदेली, जिला रायगढ़ कार्यालय : 7000477747

क्रमांक : Q/MINISTER/CG/KHS/GOVT/2021 दिनांक : 14/06/2021

# शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका **"अभ्युदय"** के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका छात्रों के सृजनात्मक और संवेदनशील अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। मैं उम्मीद करता हूँ कि यह पत्रिका छात्र-छात्राओं के लिए प्रेरणादायक हो।

उक्त पत्रिका अपने उद्देश्यों में सफल हो, इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(उमेश पटेल)

प्रति,
प्राचार्य
शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय
वाड्रफनगर,
जिला बलरामपुर–रामानुजगंज (छ.ग.)

**सुश्री जेनेविवा किण्डो**
(आई.ए.एस.)
कुलपति एवं संभागायुक्त

संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, सरगुजा
अम्बिकापुर (छ.ग.) पिन-497001 (भारत)
(पूर्ववर्ती सरगुजा विश्वविद्यालय, अम्बिकापुर)
फोनः 07774-222788, फैक्सः 07774-222790
फोनः 07774-223509

दिनांक : 11 / 06 / 2021

# संदेश

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर जिला बलरामपुर-रामानुजगंज अपनी वार्षिक पत्रिका - "**अभ्युदय**" के प्रथम संस्करण प्रकाशित करने जा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिका छात्रों के लिए अध्ययन के साथ-साथ उद्देश्यपूर्ण जीवन शैली के मार्ग पर चलने को प्रेरित करता है। इसी आशा एवं विश्वास के साथ मैं पत्रिका प्रकाशन हेतु महाविद्यालय परिवार को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

(सुश्री जेनेविवा किण्डो)
कुलपति
संत गहिरा गुरू विश्वविद्यालय,
सरगुजा, अम्बिकापुर (छ.ग.)

प्रति,
प्राचार्य
शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय
वाड्रफनगर,
जिला बलरामपुर–रामानुजगंज (छ.ग.)

# प्राचार्य की कलम से....

हम सब की कुछ न कुछ चाहत होती है, लेकिन आवश्यक नहीं की वो मिल ही जाए। जाहिर है जिसकी चाहत पूरी हो जाती है वह खुश होता है और जिसकी चाहत पूरी नहीं हो पाती वह प्रायः निराश हो जाती है। खुशी या दुखी होना मानव प्रवृत्ति है और इस पर विजय प्राप्त कर लेना या कहें निरापद रहना उसका पुर्षार्थ है, अतः हमें पुर्षार्थ करते रहना चाहीये। पुर्षार्थ से मनुष्य सामर्थवान होता है और इसका प्रणयन हम विद्यार्थी जीवन में आसानी से कर सकते हैं, इसलिए विद्यार्थी जीवन में ही इसका अभ्याश कर लेना चाहीए। दरअसल विद्यार्थी जीवन ही वह सुनहरा समय है जब मनुष्य अपने भावी जीवन कैसा होगा ? तय कर सकता है।

वैसे भी विद्यार्थी जीवन में त्याग और संयम का होना आवश्यक होता है। इस बात का उल्लेख भारतीय साहित्य में सर्वत्र उपलब्ध है। संस्कृत में विद्यार्थियों के पॉच लक्षण गिनाऐ गये हैं, वे इसी के परिचायक हैं। ये लक्षण है

**काक चेष्टा बको ध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च्।**
**अल्पाहारी गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं।।**

जिसने इस निर्णय काल अर्थात् विद्यार्थी जीवन को सही दिशा दिया है, वह भाग्य के भरोसे नहीं रहा है और सफल रहा।

आप सब ने कोरोना संकट में दृढता का परिचय देकर लोकहित में संलग्न रहते हुए महाविद्यालय की पत्रिका को आकार देने में सहयोग प्रदान किया, इसके लिए मैं महाविद्यालय के समस्त शिक्षाकों, संपादक मण्डल के सदस्यों के साथ–साथ कार्यालयीन कर्मचारियों, विद्यार्थियों और पत्रिका को मूर्तरूप देने वाले तक को भी तहेदिल से धन्यवाद देना चाहूँगा और आशा भी करूँगा की यह क्रम टूटना भी नहीं चाहिए।

**– डॉ. पी.आर. कोसरिया**

# शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' के प्रथम संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका अपने नाम के अनुरुप ही सुदूर आदिवासी बाहुल्य ग्रामीण अंचल के छात्र–छात्राओं को अंधकार रूपी अज्ञानता से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर, अर्थात् 'उदय की ओर' लेकर जाने वाली सिद्ध होगी, जैसे सूर्य के उदय होने से प्रकाश हो जाता है, वैसे ही यह पत्रिका विद्यार्थियों में रचनात्मकता, अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने, विद्यार्थियों की मौलिक रचनाओं को नया आयाम प्रदान करने एवं लेखन कला विकसित कर उन्हें प्रकाशित करने के साथ ही महाविद्यालय की वर्ष भर की गतिविधियों की जानकारी भी लोगों तक पहुँचाने में सहायक होगी। यह महाविद्यालय की महज आधिकारिक पत्रिका ही नहीं बल्कि ''अभ्युदय का आधार'' बनेगी।

महाविद्यालय के विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

– संपादक मंडल

# अनुक्रमणिका


| | |
|---|---|
| महाविद्यालय का परिचय | 01 |
| महाविद्यालयीन कार्यक्रमों की झलकियाँ | 02 |
| राष्ट्रीय सेवा योजना सात दिवसीय विशेष शिविर | 03 |
| इतिहास के आइने में बच्छराजकुँवर | 04 |
| छात्र जीवन और सोशल मीडिया | 07 |
| वायरस | 09 |
| इलाहाबाद - एक पवित्र तीर्थ स्थल | 12 |
| छात्र जीवन में पुस्तकालय का महत्व | 14 |
| गॉड पार्टिकल या ईश्वरीय कण | 16 |
| भौगोलिक भ्रमण | 17 |
| जिंदगी में रंग | 19 |
| मेरी महाविद्यालयीन शिक्षा | 20 |
| हमर गाँव | 21 |
| सपनों का वाड्फनगर | 22 |
| अपने सपनों को पूरा करेंगे | 23 |
| शैक्षणिक भ्रमण (रामगढ़) | 24 |
| ग्रीन हाउस प्रभाव | 25 |
| धरती का सम्मान | 26 |
| मेरा गाँव | 27 |

| | |
|---|---|
| राष्ट्रीय सेवा योजना का मेरे जीवन में महत्व | 28 |
| छात्रों और युवाओं के लिये प्रेरणा | 29 |
| साहस और एकता | 30 |
| मेरी किताबें | 31 |
| भू-मण्डलीयकरण | 32 |
| हमर सुघर बलरामपुर | 33 |
| सोच को बदलो | 34 |
| जीवनदर्पण | 35 |
| ये वक्त भी बीत जायेगा... | 36 |
| सुविचार एवं एक विचार | 37 |
| अनमोल वचन | 38 |
| पहेलियाँ एवं चुटकुले | 39 |
| भारत में महिलाओं की स्थिति | 40 |
| भारतीय कृषि | 41 |
| IMPORTANT FULL FORMS | 42 |
| रतनपुर पर्यटक स्थल | 43 |
| हे मनुष्य ! जरा सोचो ..... | 44 |
| महत्वपूर्ण दिवसों पर आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ | 46 |

# महाविद्यालय का परिचय

शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय, वाड्रफनगर सरगुजा संभाग मुख्यालय अम्बिकापुर से वाराणसी अम्बिकापुर मार्ग पर लगभग 90 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर दिशा में स्थित है। यह महाविद्यालय बलरामपुर जिले के वाड्रफनगर तहसील/ब्लॉक में स्थित है, जो दो राज्यों क्रमशः उत्तर में उत्तरप्रदेश, पश्चिम में मध्य प्रदेश की सीमा से लगा हुआ है। इसकी भौगोलिक स्थिति 23 अंश उत्तरी अंक्षाश तथा 83 अंश पूर्वी देशान्तर है, जिसका कुल क्षेत्रफल 11684 वर्ग मीटर है। इस महाविद्यालय की स्थापना 01.07.1989 में हुई है। प्रारम्भ में इस महाविद्यालय की कक्षाएँ 30 छात्र–छात्राओं के साथ शासकीय उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय वाड्रफनगर में संचालित हो रही थी। वर्ष 1994 में यह महाविद्यालय प्राथमिक शाला गौटियापारा में स्थानान्तरित हो गया तथा 20.07.2008 में महाविद्यालय को नवीन भवन मिला। आज महाविद्यालय सुव्यवस्थित ढंग से संचालित हो रहा है। इसी क्रम में 2008 से महाविद्यालय का नामकरण गोंडवाना राज्य की रानी दुर्गावती के नाम पर किया गया।

स्थापना के समय यह महाविद्यालय मध्यप्रदेश शासन के अंतर्गत सरगुजा जिला, बिलासपुर संभाग के गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर से संबद्ध होकर कला संकाय में छः विषयों के साथ संचालित हो रहा था। छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना वर्ष 2000 से यह महाविद्यालय छत्तीसगढ़ राज्य के उच्च शिक्षा विभाग रायपुर द्वारा संचालित होने लगा। वर्ष 2008 में महाविद्यालय की संबद्धता सरगुजा विश्वविद्यालय, सरगुजा, अम्बिकापुर से हो गयी। सन् 2012 से गणित व जीव विज्ञान विषय के साथ विज्ञान विषय में स्नातक प्रारंभ हुआ, जिसमें प्रवेश के लिए क्रमशः 100 एवं 150 सीट निर्धारित है। महाविद्यालय का संचालन 2018 में सरगुजा विश्वविद्यालय के परिवर्तित नाम संत गहिरा गुरू विश्वविद्यालय सरगुजा, अम्बिकापुर से हो रहा है।

वर्तमान में कला संकाय एवं विज्ञान संकाय संचालित हो रहा है। कला संकाय में प्रवेश के लिए 300 सीटें एवं विज्ञान संकाय के लिए 250 सीटें (जीव विज्ञान 150, गणित 100) निर्धारित हैं। शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर में सत्र् 2020–21 से दो नये संकाय (वाणिज्य संकाय एवं बी.सी.ए. संकाय) भी संचालित हो रहे हैं। यह महाविद्यालय वर्तमान में बलरामपुर जिले के महाविद्यालयों में सर्वाधिक छात्र–छात्राओं की संख्या वाला महाविद्यालय है तथा महाविद्यालय दिनों–दिन प्रगति करते हुए नैक मूल्यांकन की दिशा में अग्रसर है।

# महाविद्यालयीन कार्यक्रमों की झलकियाँ

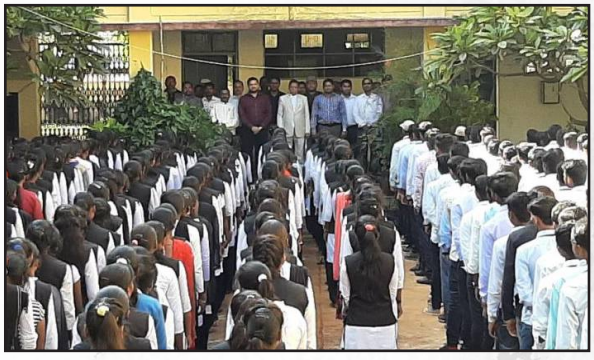

# एक कदम स्वच्छता की ओर

# राष्ट्रीय सेवा योजना सात दिवसीय विशेष शिविर

# इतिहास के आइने में
# बच्छराजकुँवर

डॉ. पी.आर. कोसरिया
प्राचार्य

बच्छराजकुँवर– वाड्रफनगर ब्लॉक से लगभग 40 किलो मीटर दूर पूर्व दिशा में स्थित है। वहाँ का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही सुन्दर है। चारों ओर घने–घने ऊँचे–ऊँचे साल के वृक्ष पहाड़ियों में उगे हुए है। नीचे जहाँ शिव की प्रतिमा है वह काले पत्थरों में उकेरा गया है। वह जगह दो छोटी पहाड़ी नदियों का संगम स्थल है। उन नदियों में पानी का हल्का बहाव भीषण गर्मी में भी जारी रहता है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि गर्मी में भी वहाँ का वातावरण कितना आर्द्र एवं नमी युक्त बना रहता होगा। जहाँ तक भू–जलस्तर का सवाल है, वह लगभग सतह तक है। इसीलिए पत्थरों में थोड़ा सा भी बोर कर देने पर पानी स्वमेव उछल पड़ता है। पानी के उस उछाल का मंदिर के ट्रस्टियों ने कुछ ज्यादा ही दुरूपयोग कर लिया या कर रहे हैं। कुछ स्थानों पर नल लगा दिया गया है, जिसका पीने के लिए उपयोग पर्यटक और दर्शनार्थी करते है। लेकिन कुछ जगहों पर ट्रस्टियों ने बोर कर पानी को बहने के लिए छोड़ दिया है उसे दुरूपयोग कहना ज्यादा श्रेयस्कर होगा। इन पंक्तियों के लेखक ने एस.डी.एम. वाड्रफनगर तथा पुरातत्व रायपुर को पत्र लिख कर उसका दुरूपयोग रोकने का आग्रह भी किया है।

**ऐतिहासिक तथ्य** :–

जहाँ तक वहाँ के ऐतिहासिक तथ्य का सवाल है। उसमें प्रथम– समय का है। बच्छराजकुँवर किस सन् में अस्तित्व में आया उसका विकास काल क्या रहा ? इस संबंध में वहाँ कोई स्थापित दस्तावेज नहीं है, और न ही किसी के पास इसका स्पष्ट लेखा–जोखा है, सब कुछ काल्पनिक है। स्थल को देखने के बाद ऐसा लगता है कि इनमें से अधिकांश स्थलों को ट्रस्टियों ने अपनी सुविधा लाभ की दृष्टि से परिवर्तित कर लिया है। इन पंक्तियों के लेखक के द्वारा विरोध पत्र दिए जाने के बाद भी ज्यादा रोक नहीं लग सका है अर्थात् जो तथ्य ट्रस्टियों के छेड़–छाड़ से बच गये हैं, उस आधार पर यह कहा जा सकता है कि–राजा बच्छराजकुँवर अपने दुश्मन से बचने के लिए इस सुरक्षित समझे जाने वाले स्थल को निवास बनाने के उद्देश्य से चला आया होगा ? लेकिन उनके ही आदमियों या कहें निकट संबधियों के द्वारा विश्वासघात किए जाने के फलस्वरूप खोज लिया गया होगा और बसने के पहले ही उनको मारकर तथा आवास को उजाड़कर उनके आराध्य देव शिव–पार्वती की मूर्ति को खंडित कर जहाँ–तहाँ फेक दिया गया होगा। जिसे बाद में क्षेत्र के लोगों (आदिवासियों की संभावना ज्यादा है) ने अलग–अलग जगह स्थापित कर पूजा अर्चना शुरू कर दिया होगा ?

**खण्डित मूर्तियाँ एवं आकृति** :–

वहाँ अभी भी खण्डित मूर्तियाँ है जिनमें प्रमुख है–शिव की मूर्ति, दुर्गा या पार्वती की मूर्ति, नन्दी, शिवलिंग इत्यादि।

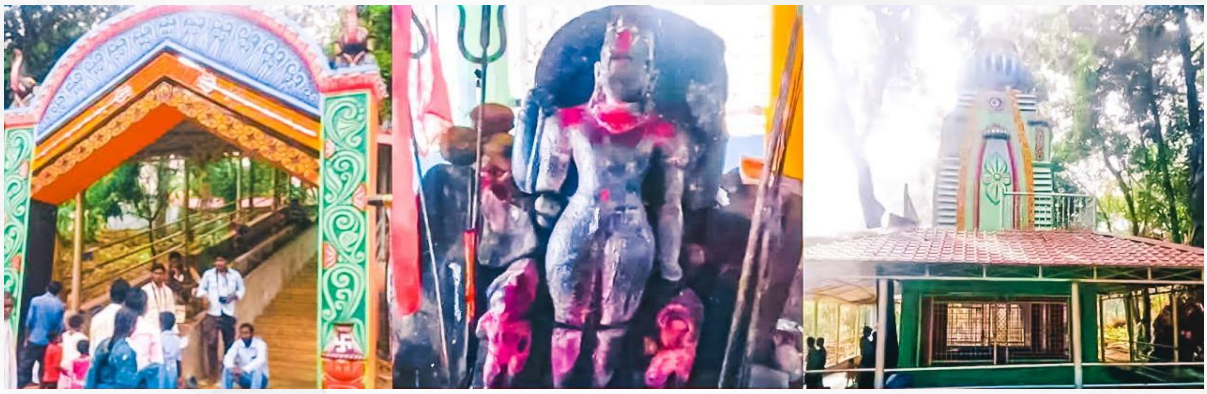

**शिव प्रतिमा** :–

काली पत्थर से निर्मित लगभग साड़े तीन फीट की मूर्ति है इनके जटा से गंगा निकल रही है तथा शीश में दायीं .ओर आधा चन्द्रमा विराजमान है और गले में नागराज भी अपनी मुद्रा मे स्थित है। उल्लेखनीय बात है कि उनके पैर के ऊपर ही दो बालक का चित्र भी उकेरा गया है जो की सामान्यतः शिव मूर्ति में नहीं देखा जाता और यही दोनो शिशु लोगो के लिए रहस्य का कारण भी बना है। उसे लोग राजा (बच्छराजकुँवर) के दो पुत्र बताते हैं और शिव मूर्ति को राजा बच्छराजकुँवर।

राजा बच्छराजकुँवर के आस–पास और दूर–दराज के लोग चमत्कार मान कर मन्नत मानते है और मन्नत पूरा होने या होने की संभावना में बकरे की बलि चढ़ाते है। बकरे की बली के मुण्डी से ही ट्रस्टी को प्रति वर्षनीलामी में 12 से 15 लाख की आमदनी हो जाती है। पहले यहाँ पर बकरे की बलि के लिए एक सीमेंट से घेरा मंदिर के ठीक ऊपर स्थापित कर दिया गया था, जिसे मेरे विरोध पत्र देने के बाद तोड़कर उसे सड़क के उसपार नया बना दिया गया है। कुछ दिन पहले शिव मूर्ति को किसी ने चाँदी का मुकूट पहना दिया था उसे भी मेरे द्वारा विरोध प्रकट करने के बाद हटा दिया गया है।

मूर्ति तीन–चार जगह से खण्डित है और उल्लेखनीय बात यह है कि मूर्ति को जहाँ–जहाँ से काटा गया है। उसे देखकर आश्चर्य होता है कि ठोस काले पत्थर से निर्मित मूर्ति को किस धारदार वस्तु से काटा गया होगा कि कटा हुआ हिस्सा ककड़ी की तरह बिना स्क्रेच के अलग हो गया है। मूर्ति के हाथ और पैर को छोड़ भी दे तो चेहरे की कटाव भी चिकना ही है। उस काल में (संभवतः 12 वीं 13 सदी के आसपास) ऐसे कौन से तेज धारदार हथियार रहा होगा जिससे कठोर पत्थरों से बनी मूर्तियों को बिना स्क्रेच दिये ककड़ी की तरह अलग किया गया होगा ? यह एक अलग शोध का विषय हो सकता है।परिसर में कुछ खण्डित एवं कुछ सही सलामत नन्दी शिवलिंग भी इकट्ठा कर सजा दिया गया है। ये शिला खण्डित तोड़े या अर्धनिर्मित हो सकते है।

**पार्वती या रानी की मूर्ति** :–

पार्वती की मूर्ति को ऊपरी पहाड़ी में विशाल तरासे पत्थर जिसे शिला स्तंभ (मेहराब) का सहारा देकर स्थापित कर दिया गया है। वर्तमान में इसे मंदिर का आकार दिया जा रहा है। इस प्रतिमा को ही लोग बच्छराजकुँवर की पत्नी अर्थात् रानी के नाम से पूजते हैं। बताने वाले इतना जरूर बताते है कि वहाँ पर नवरात्रि मे मेला लगता है। सामान्यतः नवरात्रि दुर्गा के उपासना अवधि में लगता है। उस हिसाब से भी मूर्ति दुर्गा के होने को प्रमाणित करती है। यह मंदिर पूर्व में स्थापित जगह दो पहाड़ी समतल जगह जहाँ भग्नावशेष परकोटा है उसके बाहर बनाया गया है।

**खण्डित शिलाखण्ड** :–

उक्त स्थल में यहाँ–वहाँ आटा चक्की के अवशेषों तथा विशाल मेहराबों के टुकड़े बिखरे पड़े हैं। इसे देखकर लगता है कि कुछ लोग वहाँ पर रह रहे थे और निर्माण कार्य भी कर रहे थे। उल्लेखनीय बात

यह है कि जिस तरह से शिव की मूर्ति के साथ दो नन्हें बालक का चित्र उकेरा गया है ठीक उसी प्रकार से रानी अर्थात् पार्वती की प्रतिमा मे अर्थात  चरण में दो नन्हे बालक उकेरे गये हैं।

**पानी सप्लाई या सर्प :–**

स्थल के बसिंदे या कहें तो दुकानदार सब उस पानी सप्लाई करने वाले शिला खण्ड जो समान अकार मे बने है इसको सर्प बताते हैं। यह स्थल मंदिर प्रवेश के पहले वाड्रफनगर साइड में स्थित है। उसे देखने से साफ स्पष्ट होता है कि राजा ने अपने या अपने सैनिकों के रसोई के लिए पहाड़ी नाला के ऊपरी हिस्से से बहते जल स्त्रोत को लाने के लिये बनवाया था जिसका निर्माण एक तरह के आयताकार बराबर नाप के पत्थरों को बीच से नालीनुमा बनाया गया था और इसे लाइन से जल स्त्रोत से भोजनालय तक क्रम से (ऊपर से नीचे की ओर) रखा गया था जो समय के अनुसार पानी के बहाव के कारण नीचे की मिट्टी खिसक जाने से अपने जगह से हट गये हैं। इसे लोग सर्प कहते है तथा पत्थर पर पानी के लिए बनाए गये आकार को सर्प की रीढ़ की हड्डी बताते हैं और बराबर–बराबर कटे पत्थर के टुकड़े के बारे में ऐसी किंवदन्तियाँ प्रचलित हो गया कि सर्प जिंदा हो रहा था इसलिए उसे काट दिया था।

पानी के लिए बनाए गये पत्थर एक भग्नावशेष घर में आकर समाप्त होता है। इससे सिद्ध होता है कि वहाँ पर रसोइ घर ही रहा होगा ? जहाँ तक पानी लाने के लिए उक्त प्रकार की व्यवस्था (तब पानी पहुँचाने वाले पाइपों का अविष्कार नही हुआ था इसलिए पानी दूर तक पहुँचाने के लिए पत्थर के बनाए नालियों का उपयोग करते रहे होगें)की जाती रही होगी?

कुछ भग्नावशेष रास्ते के उस पार भी देखे जा सकते हैं। जिसमें भवन, तालाब आदि बने होने के संकेत मिलता है उसके बारे में यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि राजा के सिपाही यहाँ निवास करते रहे होगें ? यहाँ पर हाथ के बने ईटों के ढेर भी हैं जिससे सिध्द होता है कि उस काल में आज की तरह के ईटों का विकास नहीं हुआ था। इस तथ्य के आलोक में देखें तो वह स्थल ईसा पूर्व का प्रमाणित होता है पर इसमें संदेह है। इसलिए दूसरा यह हो सकता है कि राजा अपने दुश्मन से बचने के लिए आधुनिक तरह की  ईंट की व्यवस्था बाहर से न करते हुए–वहीं पर हाथ से बने चपटे ईंटनुमा वस्तु बनाकर घर का निर्माण कराया होगा। उक्त क्षेत्र के भग्नावशेषों को ईसापूर्व नहीं कहने का एक कारण यह भी है कि ऊपर तथाकथित रानी के मंदिर स्थल तक जो पहुँच मार्ग (सड़क) बनाया जा रहा है उसकी खुदाई में अनेक अवशेष भी मिले है उनमें से कुछ को वहीं सड़क किनारे रख दिया गया है। वहीं से मुझे एक छोटा सा फावड़ा मिला है उसे देखकर यही कहा जा सकता है कि उस फावड़ा का उपयोग ऊपर किला बनाते समय या जो परकोटा जहाँ स्थित है उसके निर्माण में किया गया होगा और उसके मूठ के टूट जाने पर या अन्योन्य कारणों से मिट्टी में दब गया रहा होगा जो कि सड़क निर्माण के समय मिला है। वह 12 वीं 13 शताब्दी का हो सकता है।

मंदिर के ट्रस्टियों ने अनेकों पुरातत्व स्थलों को अपनी सुविधा के अनुसार इक्ट्ठा कर वहाँ नया निर्माण कर लिया है जैसे हनुमान मंदिर, कृष्ण प्रतिमा और मंदिर के ऊपरी ढलान वाले हिस्से में ऐतिहासिक शिला खण्डों को हटाकर केला और अन्य पौधे रोपित कर दिये हैं। इसी तरह से ऊपर पहाड़ी जिसे रानी का स्थल माना जाता है वहाँ तक पहुँचने के लिए सड़क मार्ग का निर्माण कराया जा रहा है। जिसके कारण ऐतिहासिक महत्व के पत्थरों को या तो वहाँ से हटा दिया गया है या उसे तोड़ दिया गया है। कुल मिलाकर ट्रस्टियों के द्वारा ऐतिहासिक महत्व के शिला– खण्डों, स्थलों आदि को परिवर्तित कर क्षेत्र के अस्तित्व को ही परिवर्तित कर दिया है। जिसके कारण धीरे–धीरे परिसर की प्राचीन पहचान नष्ट हो रही है। मेरा सुझाव है कि यदि कोई निर्माण किया जाता है तो सबसे पहले शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय के प्राचार्य और प्राध्यापक से विचार विमर्श करने के बाद ही करें।

# छात्र जीवन और सोशल मीडिया

सुधीर कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)
singhsudhirkumar00@gmail.com

प्रिय छात्र–छात्राओं मैं अपने इस लेख के माध्यम से आपके समक्ष अपने अध्ययन से लेकर उच्च शिक्षा में आज तक के अध्यापन के दौरान छात्र जीवन पर सोशल मीडिया के प्रभाव के संबंध में अपने कुछ अनुभव साझा करना चाहता हूँ और आप के अन्दर एक ऐसी समझ शक्ति विकसित करना चाहता हूँ कि सोशल मीडिया आपके अध्ययन में साधक बने बाधक नहीं , मित्र बने शत्रु नहीं, साधन बने साध्य नहीं। प्रिय छात्रों छात्र जीवन एक ऐसा स्वर्णिम अवसर होता है, जिसमें छात्र अपने पंखो की उडान लिए एक सुनहरे अवसर, भविष्य को संवार कर अपने सपने को साकार कर सकता है और एक अच्छा नागरिक बनकर परिवार, समाज, देश के विकास में योगदान दे सकता है। मैं भी इन्हीं सपनों के साथ विश्वविद्यालय गया था मुझे उम्मीद है कि आप भी इन्हीं लक्ष्यों को लेकर स्कूल से महाविद्यालय में आये होंगे। महाविद्यालय का परिवेश स्कूल से बिल्कुल अलग होता है। छात्र स्वयं को स्कूल की तुलना में स्वतंत्र महसूस करता है। इन्हीं स्वतंत्र जीवन में उसकी पहुँच सोशल मीडिया से होने लगती है। सर्वप्रथम सोशल मीडिया क्या होता है? इससे अवगत होना आवश्यक है। इंटरनेट पर फेसबुक, ट्विट्र, व्हाट्सअप्प, यू–ट्यूब, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट जैसी कई सोशल वेबसाइट मिलकर सोशल मीडिया बनाती है। वैसे तो कोई भी साधन लाभ के उद्देश्य के लिए ही बनाया जाता है। सोशल मीडिया सूचना, समाचार, शैक्षणिक सामग्री आदि प्रतिभाशाली युवाओं के लिए वरदान है, क्योंकि छात्र यूट्यूब, गूगल आदि के माध्यम से अपने विषय के विभिन्न समस्याओं को आसानी से जान सकते है। विश्व की कोई भी जानकारी गूगल के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक कॉलेज में सूचनाओं के आदान प्रदान के लिए व्हाट्सअप ग्रुप बनाये जाते है जिसके माध्यम से मुख्यालय से काफी दूर के छात्र भी सूचना को प्राप्त कर लेते है। ऐसे बहुत से लाभ है जिन्हें छात्र सोशल मीडिया से प्राप्त कर सकते है, किन्तु प्रत्येक साधन के दो पहलू होते है एक सकारात्मक पक्ष, दूसरा नकारात्मक पक्ष। जिसको कि स्कूल – कॉलेजों के प्रदर्शन में बाधा नहीं होना चाहिए क्योंकि छात्रों को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि सोशल नेटवर्किंग साइटें काल्पनिक दुनिया बनाती है जो कि वास्तविकता से बिल्कुल भिन्न होती है और अधिकांश छात्र इसी

काल्पनिक दुनिया को सही समझ कर अपना अधिकांश समय इन सोशल नेटवर्किंग साइटों पर बिताता है जिसका परिणाम इतना घातक होता है कि वह स्कूल –कॉलेज में जिस भविष्य को संवारने के लिए आता है उससे कोसों दूर चला जाता है और समाज, देश में योगदान की जगह पर बाधक बनता है जिससे बेरोजगारी, अपराध, आंतकवाद, नक्सलवाद आदि सामाजिक विकृतियों का जन्म होता है। अतः छात्रों के अंदर सहज ज्ञानयुक्त क्षमता होनी चाहिए कि वे सोशल मीडिया पर कितना समय बितायें तथा उन साइटों का ही प्रयोग करे जो कि उनके ज्ञानवर्धन में सहायक हो। अतः यह छात्रों को स्वयं तय करना होगा कि सोशल मीडिया निजता पर हमला करता है। यह छात्रों को आदी बनाता है जो कि स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनता है। सोशल मीडिया पर फेक न्यूज से सांप्रदायिक दरार जैसी सामाजिक विकृतियों का जन्म होता है जो कि शांति प्रिय नागरिकों के दिमाग में जहर उत्पन्न करती है।

अन्त में मुझे छात्रों से यही कहना है कि सोशल मीडिया के फायदे और नुकसान दोनों है। यह उपयोगकर्ता पर निर्भर करता है कि वह इसे कैसे उपयोग करता है क्योंकि एक छात्र इन्ही इंटरनेट के माध्यम से आई.ए.एस. बन जाता है वही दूसरा इंटरनेट के द्वारा सीख कर आंतकवादी बनता है। अब आपको तय करना है कि आपको क्या बनना है। आप महाविद्यालय स्तर पर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, तो आपके अंदर स्वयं समझ विकसित हो गयी होगी की आपके लिए सही क्या है और गलत क्या है। मुझे उम्मीद है कि आप निर्माण और विकास वाला रास्ता चुनकर के सोशल मिडिया को साधक के रूप में उपयोग कर अपनी मंजिल को प्राप्त करेंगे।

"यूँ ही नहीं मिलती राही को मंजिल,
एकजुनून सा दिल में जगाना होता है।
पूछा चिडिया से कैसे बना आशियाना, बोली–
भरनी पड़ती है उडान बार–बार
तिनका–तिनका उठाना पड़ता है।"

इसी तरह से आप भी अपने लक्ष्य के तरफ जूनुन के साथ चलते रहिये और स्वामी विवेकानंद जी के कथनों के अनुरुप "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक मंजिल मिल न जाये।"

"

सही दिशा और सही समय का ज्ञान न हो,
तो उगता हुआ सूरज भी डूबता हुआ दिखता है।

# वायरस

सुरेश कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक (प्राणीशास्त्र)
sureshkumarpatel972@gmail.com

1898 में फ्रेडरिक लोपर और पॉल फ्रॉश ने शोध में पाया कि पशुओं में पैर और मुँह की बीमारी का कारण कोई बैक्टीरिया से भी छोटा संक्रामक कण है। यह वायरस की प्रकृति का पहला संकेत था, एक ऐसा जेनेटिक तत्व जो जीवित और मृत अवस्थाओ के बीच कहीं आता है। वैज्ञानिक लंबे समय से वायरस की संरचना और कार्य को उजागर करने का प्रयास करते रहे हैं। वायरस इस मामले में अद्वितीय है कि उन्हें जीवविज्ञान के इतिहास में अलग–अलग समय पर जीवित और निर्जीव दोनो रुपों में वर्गीकृत किया जाता रहा है। वायरस कोशिकाएं नही बल्कि गैर जीवित संक्रामक कण होते है। वे विभिन्न प्रकर के जीवों में कैंसर समेत कई बीमारियों को जन्म देने में सक्षम हैं।

**वायरस क्या है ?**

वायरस बहुत छोटे रोगाणु या विषाणु होते है, जो प्रोटीन की खोल के अंदर अनुवांशिक सामग्री से बने होते है। एक वायरस की अनुवांशिक सामग्री आर.एन.ए. या डी.एन.ए. हो सकता है, जो आम तौर पर प्रोटीन, लिपिड या ग्लाइकोप्रोटीन की खोल से घिरी रहती है या तीनों का थोड़ा–थोड़ा संयोजन होता है। कोई वायरस किसी भी जानवर पौधे या बैक्टीरिया को संक्रमित कर सकता है और अक्सर बहुत गंभीर यहाँ तक कि घातक बीमारियों का कारण बनता है। कोई वायरस मेजबान सेल की सहायता के बिना वृद्धि नहीं कर सकता है और हालांकि वे फैल सकते है लेकिन वायरस में स्वयं प्रजनन की क्षमता की कमी होती है और इसलिये इसे सामान्य जीवित जीवों जैसा नहीं माना जाता है। वायरस किसी ठग की तरह होते है। वे जीवित, सामान्य कोशिकाओं पर आक्रमण करते हैं और उन कोशिकाओं का उपयोग अपने जैसे अन्य वायरस की संख्या बढ़ाने के लिये करते हैं। वायरस कोशिकाओं को मार सकते हैं, क्षति पहुँचा सकते है या बदल सकते है और आपको बीमार कर सकते हैं। विभिन्न वायरस आपके शरीर में कुछ कोशिकाएं जैसे आपके लीवर, श्वसन तंत्र या खून पर हमला करते है। कुछ सबसे आम या सबसे प्रसिद्ध वायरस में ह्यूमन इम्यूनो डेफिशियेंसी वायरस (एच.आई.वी.) जो एड्स का कारण बनता है, हर्पीस सिम्पलेक्स वायरस, जो ठंडे घावों, चेचक, मल्टीपल स्क्लेरोसिस का कारण बनता है और ह्यूमन पेपिलोमा वायरस जो अब वयस्क महिलाओं में गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर का एक प्रमुख कारण माना जाता है, इत्यादि शामिल है। आम सर्दी जुकाम भी एक वायरस के कारण होता है। चूँकि अभी भी नए–नए विषाणुओं के उत्पत्ति का मुद्दा रहस्य से घिरा हुआ है, इन वायरस या विषाणुओं के कारण होने वाली बीमारियां और उन्हें ठीक करने के तरीके अभी भी विकास के शुरुआती चरणों में है। वायरस बेहद छोटे, व्यास में लगभग 20–400 नैनोमीटर तक होते हैं।

**वायरस के प्रकार** :–

वायरस को उसके होस्ट के प्रकार के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। इसी आधार पर होम्स ने 1948 में वायरस को 3 समूहो में विभाजित किया है। वे है :–

एनिमल वायरस :– वायरस जो मनुष्य सहित पशुओं की कोशिका को संक्रमित करते है, उन्हें एनिमल वायरस कहा जाता है। उदाहरण के लिए, इन्फ्लूएंजा वायरस, रैबीज वायरस, मम्प्स वायरस (जिससे गलसुआ रोग होता है), पोलियो वायरस, स्मॉल पॉक्स वायरस, हेपेटाइटिस वायरस, राइनों वायरस (सामान्य सर्दी जुकाम वाला वायरस) आदि। इनकी आनुवांशिक सामग्री आर.एन.ए. या डी.एन.ए. होता है।

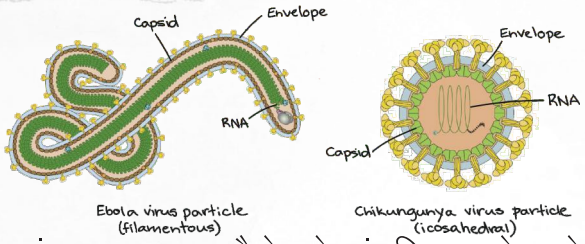


प्लांट वायरस :– पौधो को संक्रमित करने वाले वायरस को प्लांट वायरस कहा जाता है। उनकी आनुवांशिक सामग्री आरएनए होता है जो प्रोटीन की खोल में रहता है। उदाहरण के लिए तंबाकू मोजैक वायरस, पोटैटो वायरस (आलू विषाणु) बनाना बंची टॉप वायरस, टोमॅटो येलो लिफ कर्ल वायरस (टमाटर की पत्ती), बीट येलो वायरस और टर्निप येलो वायरस इत्यादि हैं।

**वायरस कैसे फैलता है** :–

वायरस पर्यावरण से या अन्य व्यक्तियों के माध्यम से मिट्टी से पानी में या हवा में पहुँच कर नाक, मुँह या त्वचा में किसी भी कट के माध्यम से हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं और संक्रमित करने के लिए किसी कोशिका की तलाश करते है। उदाहरण के लिए सर्दी जुकाम या फ्लू का विषाणु उन कोशिकाओं को लक्षित करता है जो श्वसन (यानी फेफडों) या पाचन नली (यानी पेट) में होती है। एच.आई.वी. (ह्यूमन इम्यूनोडेफिशियेंसी वायरस) जो एड्स का कारण

होता है, हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली की टी–कोशिकाओं (एक प्रकार की सफेद रक्त कोशिकाएं जो संक्रमण और बीमारी के कारण से लड़ती है) पर हमला करता है।

विषाणु और जीवाणु संक्रमण दोनों मूल रुप से मनुष्यों में एक ही तरह से फैलते हैं। वायरस मनुष्यों में निम्नलिखित कुछ तरीकों से फैल सकते है :–

1. जिस व्यक्ति को सर्दी जुकाम है उस व्यक्ति की खांसी या छींक से वायरस संक्रमण फैल सकता है।
2. वायरस किसी अन्य व्यक्ति के हाथ को छूने या हाथ मिलाने से फैल सकता है।
3. यदि कोई व्यक्ति गंदे हाथों से भोजन को छूता है तो वायरस आंत में भी फैल सकता है।
4. शरीर के तरल पदार्थ जैसे कि खून, लार और वीर्य ऐसे ही अन्य तरल पदार्थों के इंजेक्शन या यौन संपर्क द्वारा संचरण से वायरस, विशेष रुप से हेपेटाइटिस या एड्स जैसे वायरल संक्रमण अन्य व्यक्तियों के संपर्क में फैल सकता है।

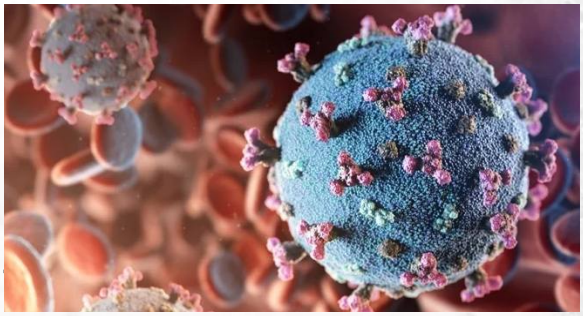

जब आप के शरीर में कोई वायरस प्रवेश करता है तो आप हमेशा बीमार नहीं होते बल्कि कई बार आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली इससे लड़ने में सक्षम होती है। अगर आपको वायरल संक्रमण हुआ है तो इसके कारण होने वाली विभिन्न स्थितियों का पता करने में सहायता के लिए एक इम्यूनोग्लोबुलिन ब्लड टेस्ट किया जा सकता है। अधिकांश वायरल संक्रमणो के मामले में इलाज केवल लक्षणों को कम करने में मदद कर सकता है, आप केवल अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली के वायरस से लड़ने की प्रतीक्षा कर सकते है। एंटीबायोटिक्स वायरल संक्रमण के लिए काम नहीं करतें है। कुछ वायरल संक्रमणो के इलाज के लिए एंटीवायरल दवाएं दी जाती है।

कुछ टीके भी उपलब्ध हैं जो आपको कई वायरल बीमारियों से बचाने में मदद कर सकते है। स्माल पॉक्स जैसे कुछ प्रकार के वायरल संक्रमणों को रोकने में टीका काफी प्रभावी रहा है। टीका शरीर को विशिष्ट प्रकार के वायरस के खिलाफ प्रतिरक्षा प्रणाली को लड़ने में मदद करके काम करता है।

जा रही हैं जो वायरस को गुणा करने से रोकती हैं लेकिन दुर्भाग्यवश, इन उपचारों का उपयोग अभी भी बहुत कम वायरस पर किया जा सकता है और इनकी प्रभावशीलता सीमित है। जब आप खांसतें या छींकते हैं, तो आप हवा में रोगाणु से भरी छोटी बूंदो को छोड़ते हैं। सर्दी जुकाम या फ्लू आमतौर पर इसी तरह फैलते हैं।

आप निम्नलिखित कुछ बातों का ध्यान रखकर रोगाणुओं के प्रसार को रोकनें में मदद कर सकते हैं–

1. जब आप छींकते है या खांसते है तो आप अपने मुंह और नाक पर हाथ की बजाय अपनी कोहनी को रखें।
2. भोजन खाने या तैयार करने से पहले अपने हाथों को अवश्य साफ करें और बाथरुम का उपयोग करने या डायपर बदलने के बाद अपनी आँखों, नाक या मुँह को छूने से बचें तथा हाथों को अच्छे से साफ करें।
3. हाथ धोना बीमारी को रोकने का सबसे प्रभावी लेकिन सबसे अधिक अनदेखा किया जाने वाला तरीका है। साबुन और पानी विषाणुओं को मारने का काम करते हैं। कम से कम 20 सेकण्ड तक अपने हाथ धोएं और अपने दोनों हाथों को आपस में अच्छे से रगड़े। डिस्पोजेबल हैंड वाइप्स या जेल सैनिटाइजर्स भी अच्छा काम करते हैं।

"

जिंदगी विज्ञान के प्रयोग जैसी है
जितनी बार प्रयोग करेंगें, पहले से उतने ही बेहतर सफल होंगे।

# इलाहाबाद - एक पवित्र तीर्थ स्थल

डॉ. तोयज शुक्ला
सहायक प्राध्यापक (रसायन शास्त्र)
shuklatoyaj290@gmail.com

इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश राज्य में त्रिवेणी संगम तट पर स्थित धार्मिक व शैक्षणिक नगर है जो उत्तरप्रदेश के सांस्कृतिक राजधानी के रुप में विख्यात है। यह गंगा, यमुना, सरस्वती के संगम पर स्थित है, इसलिये इसे त्रिवेणी संगम भी कहते हैं। यहाँ प्रत्येक 12 वर्ष में कुंभ मेला लगता है जो पर्यटकों का एक बड़ा आकर्षण का केंद्र है। यह एक प्राचीन नगर है और हिन्दू धर्म के अनुयायियों का एक बड़ा तीर्थ स्थान है। इलाहाबाद का नाम पहले प्रयाग था जिसका वर्णन रामायण के साथ–साथ महाभारत में भी देखने को मिलता है। मुगल बादशाह अकबर के द्वारा इसका नाम इलाहाबाद रखा गया था, जो बाद में लोगों के द्वारा इलाहाबाद के नाम से जाना जाने लगा। इलाहाबाद का अर्थ अरबी शब्द इलाही जो कि अकबर द्वारा चलाये गये नये धर्म दीन–ए–इलाही के संदर्भ में अल्लाह के लिये एवं फारसी से आबाद अर्थात् बसाया हुआ था। ऐसा कहा जाता है कि सृष्टि के सृजनकर्ता भगवान ब्रम्हा ने इस शहर की पवित्रता देखते हुए इसका नाम तीर्थराज दिया यानि सभी तीर्थस्थलों का राजा।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना भी 1885 में इलाहाबाद में ही हुई थी। 1920 में महात्मा गाँधी द्वारा प्रारंभ किये गये प्रथम असहयोग आंदोलन और खिलाफत आंदोलन जैसे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की नींव भी यहीं पर रखी गई थी। 1857 के विद्रोह का नेतृत्व यहाँ पर लियाकत अली खान ने किया था। इलाहाबाद वही पवित्र स्थान है जहाँ पर 27 फरवरी 1931 को अंग्रेजो से लोहा लेते हुए महान स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद ने ब्रिटिश पुलिस अध्यक्ष नाट बाबर और पुलिस अधिकारी विश्वेश्वर सिंह को घायल कर कई पुलिस कर्मियों को मार गिराया और अंततः खुद को गोली मारकर आजाद रहने की प्रतिज्ञा को पूरा किया। इलाहाबाद का प्रसिद्ध 'इलाहाबाद विश्वविद्यालय' की स्थापना 23 सितंबर 1887 को हुई थी। यह भारत के चौथे सबसे पुराने विश्वविद्यालयों में से एक है। इस विश्वविद्यालय को संयुक्त प्रांत के गर्वनर सर विलियम्स म्योर की देख रेख में स्थापित किया गया था तथा इसका डिजाइन सर विलियम एमर्सन ने किया था। यह वही स्थान है

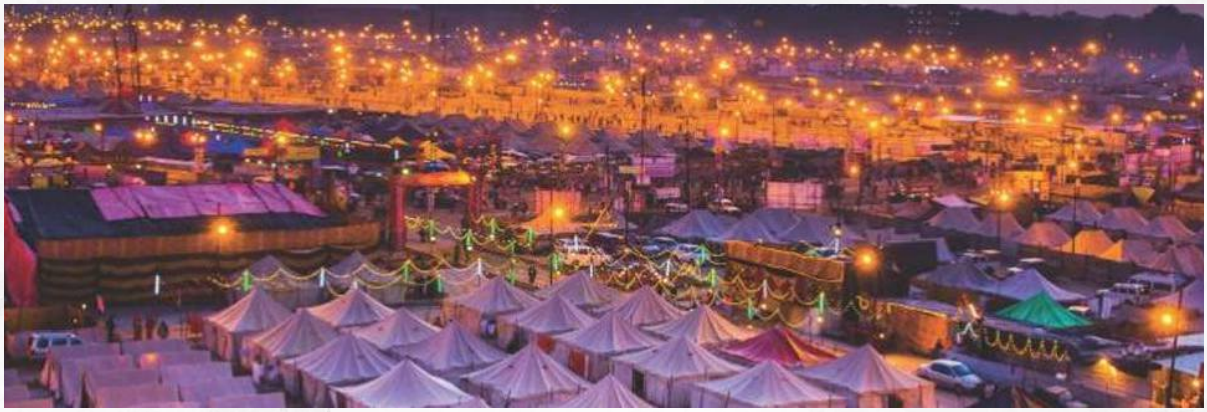

जहाँ से भारत के पूर्व राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा, जाकिर हुसैन, मदन मोहन मालवीय, नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री सूर्य बहादुर थापा, पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह और चन्द्रशेखर आदि महान विभूतियों ने अध्ययन किया है। उत्तरप्रदेश का उच्च न्यायालय इलाहाबाद में ही स्थित है। 17 मार्च 1866 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय अस्तित्व में आया। इसकी एक बेंच लखनउ में है। इलाहाबाद में स्थित आनंद भवन भारतीय स्वंतंत्रता आंदोलन का केन्द्र बिन्दु था। इलाहाबाद मूल रुप से एक प्रशासनिक एवं शैक्षणिक शहर है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तरप्रदेश के महालेखा परीक्षक, रक्षा लेखा के प्रमुख नियंत्रक (पेंशन), पी.सी.डी.ए., उत्तरप्रदेश लोक सेवा आयोग , उत्तरप्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद, पुलिस मुख्यालय, मोती लाल नेहरु प्रौद्योगिकी संस्थान, मेडिकल एंड कृषि कॉलेज, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (IIIT) आई.टी.आई. नैनी, इफको फूलपुर, त्रिवेणी ग्लास यहाँ के कुछ प्रमुख संस्थान हैं।

धार्मिक दृष्टि से संपन्न इलाहाबाद में पातालपुरी मंदिर, हनुमान मंदिर, बडे हनुमान जी मंदिर, शिवकुटी महादेव मंदिर, अलोपी देवी मंदिर, कल्याणी देवी मंदिर, मनकामेश्वर मंदिर, नागवासुकी मंदिर, बेनी महोदव मंदिर आदि इलाहाबाद के प्रमुख मंदिर हैं।

ब्रिटिश और मुगलकालीन कई निशानियाँ इलाहाबाद में देखी जा सकती हैं। इलाहाबाद का किला, अल्फ्रेड पार्क, थार्नहिल मेन मेमोरियल, मिन्टो पार्क, खुसरो बाग, अशोक स्तंभ आदि भी प्रमुख हैं। यहाँ परिवहन सुविधाओं में हवाई, रेल, सड़क मार्ग आदि सभी तरह के साधन उपलब्ध हैं। प्रसिद्ध रचनाकारों में सूर्यकांत त्रिपाठी ''निराला'', सुमित्रानंदन पंत, धर्मवीर भारती, रघुपति सहाय (फिराक गोरखपुरी) , हरिवंश राय बच्चन (फिल्म स्टार अमिताभ बच्चन के पिता) का संबंध इलाहाबाद से रहा है। इन्हीं कारणों से प्रयागराज को उसके उत्तम साहित्य, कला एवं संस्कृति की अद्भूत मिश्रण के लिए जाना जाता है।

"

चलो लाजमी था मेरा तेरे शहर इलाहाबाद आना,
कुछ सीखा हो या ना सीखा हो, पर संभलना जरुर सीख लिया।

# छात्र जीवन में पुस्तकालय का महत्व

पंकज कुमार
ग्रंथपाल

pankajbhu90@gmail.com

**पुस्तकालय का अर्थ** :–

पुस्तकालय को अंग्रेजी में लाईब्रेरी कहा जाता है। यह बहुत महत्वपूर्ण संसाधन है। ऐसे बहुत सी पुस्तकें होती हैं जो बहुत दुर्लभ होती है। हर व्यक्ति उसे नहीं खरीद सकता। इस तरह के पुस्तकें हमें पुस्तकालय में आसानी से मिल जाती है। पुस्तकालय में हजारों लाखों की संख्या में विभिन्न प्रकार की किताबें होती है। पढ़नें वालों के लिये यह किसी स्वर्ग से कम नही होता है। पुस्तकालय का बहुत बडा फायदा यह है कि किसी भी विषय पर सैकडो किताबें मिल जाती है जिससे विद्यार्थी अच्छे नोट्स बना कर अच्छे नम्बर पा सकते हैं। आज कल पुस्तकालय का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है साथ ही डिजीटल क्रंति आने के बाद ऑनलाईन पुस्तकालय की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

**पुस्तकालय का उद्देश्य** :–

पुस्तकालय का उद्देश्य छात्रों को विभिन्न प्रकार की किताबें उपलब्ध कराना होता है जिससे वह अच्छे से पढ़ाई कर सकें। पुस्तकालय मुफ्त में किताबें उपलब्ध कराती है। जिससे छात्रों का बहुत फायदा होता है। पुस्तकालय के महत्व को प्राचीन काल में ही समझ लिया गया था। इस तरह विश्व में अनेक प्राचीन पुस्तकालय हैं। यदि छात्र छात्राओं के पास पुस्तकें नही होगी तो वह पढ़ाई कैसे करेंगे ? इसकी आवश्यकता को देख कर ही पुस्तकालय की स्थापना की गई थी।

**विद्यार्थी जीवन में पुस्तकालय का महत्व** :–

पुस्तकालय का बड़ा फायदा है कि किसी भी विषय की किताब को आाप आसानी से पा सकते हैं, सभी स्कूल, कालेजों एवं विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय होती

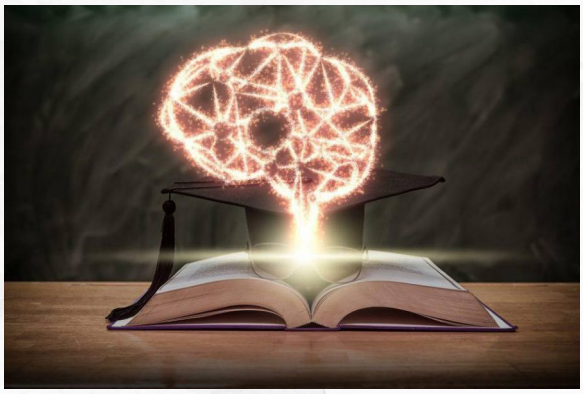

है जहॉ पर एक किताब पढ़ कर हम और भी दूसरी किताबें उसके स्थान पर ले सकते हैं। इस तरह कोई भी व्यक्ति सैकडों किताबें पढ़ सकता है। पुस्तकालय में किसी भी किताब को कई घण्टो तक पढ़ सकते है। किसी प्रकार की रोक टोक नहीं होती है।

**दुर्लभ किताबों को पढ़ने का अवसर** :–

पुस्तकालय में हर प्रकार की नई पुरानी के साथ–साथ दुर्लभ किताबें उपलब्ध होती है। ऐसी बहुत सी किताबें हैं जो बाजार में आसानी से नहीं मिलती है। उन्हें खरीदनें के लिये बहुत भटकना पडता है। इस तरह की पुस्तकें पुस्तकालय में आसानी से मिल जाती है।

**गरीब छात्र–छात्राओं को लाभ** :–

देश में ऐसे बहुत विद्यार्थी हैं जिनके पास किताब खरीदने के लिये पर्याप्त पैसा नहीं होता। आजकल तो किताबें भी बहुत महंगी मिलती है। ऐसे स्थिति में पुस्तकालय वरदान साबित होती है। वहॉ पर कोई भी विद्यार्थी किसी किताब को पढ़ सकता है और उसे निर्गत करा कर घर भी ले जा सकता है और पढाई जारी रख सकता है। इस लिये पुस्तकालय गरीब छात्रों के लिये किसी वरदान से कम नहीं है।

**अच्छे नोट्स बनाने में सहायक** :–

पुस्तकालय में जाकर विभिन्न किताबों से पढ कर विद्यार्थी अच्छे नोट्स बना सकते हैं और परीक्षा में अच्छे नम्बरों से पास होकर अपना भविष्य उज्जवल कर सकते है। पढाई के लिये अच्छी पुस्तकों का होना बहुत ही आवश्यक है।

**पुस्तकालय में एक विषय के अनेक पुस्तकें मिलती है** :–

पुस्तकालय में एक ही विषय की बहुत से किताबें होती है जिसको पढ कर विद्यार्थी अच्छा नोट्स तैयार करते है। यदि एक विषय की एक ही किताब होगी तो उससे अच्छा नोट्स नहीं बन पायेगा। बहुत से किताबों को पढ़नें से ज्ञान की वृद्धि होती है और परीक्षा में अच्छे नम्बर आते है। पुस्तकालय में बहुत से अच्छे पुस्तकें होती हैं जिसे विद्यार्थी आसानी से लेकर पढ़ सकते हैं। उन्हें यह पुस्तकें मुक्त में आसानी से मिल जाती है और कोई पैसा भी नहीं देना होता है। यदि सभी पुस्तकालय को हटा दिया जाये तो छात्र–छात्राओं की पढ़ाई पर गहरा असर पडेगा, उन्हें पढ़नें के लिये अच्छी किताबें नही मिल पायेंगी जिसका परिणाम यह होगा की परीक्षा में अच्छे नम्बर भी नहीं पा सकेंगे।

**पुस्तकालय मानव इतिहास की रक्षा करती है** :–

सभी प्रकार की घटनायें और ज्ञानवर्धक तथ्यों को इतिहास की किताब में दर्ज की जाती है। इस तरह यह भी कहा जा सकता है कि पुस्तकें हमारे इतिहास की रक्षा करती है। पुस्तकालय में हजारों पुस्तकें सुरक्षित रूप में रखी रहती हैं इस लिये मनुष्य का ज्ञान एवं उसकी संस्कृति और उसकी सारी घटनाओं को पुस्तकालय सुरक्षित रूप में रखती है। जिससे भविष्य की पीढ़ी को पुराने समय के बारे में पता चल सके।

> एक पुस्तकालय विचारों को जन्म देने वाला प्रसूति गृह है,
> एक ऐसा स्थान जहाँ इतिहास जिंदगी पाता है।
> –नार्मन कजिन्स

# गॉड पार्टिकल या ईश्वरीय कण

शिवम् पटेल
अतिथि व्याख्याता (भौतिकशास्त्र)
shivamp575@gmail.com

इस दुनिया में मौजूद प्रत्येक चीजों का निर्माण कणों से हुआ है। कणों ने मिलकर चीजों को बनाया है। बात इस तरह से है कि हमारे ब्रह्माण्ड में मौजूद सभी चीज एटम से मिलकर बनी हुई है। एक एटम इलेक्ट्रॉन, प्रोटान और न्यूट्रान नाम के तीन कणों से बना होता है। ये कण भी सबएटॉमिक पार्टिकल से मिलकर बनें होते है जिनको क्वार्क कहा जाता है। इन कणों का द्रव्यमान अब तक रहस्य बना हुआ है। प्रोटॉन और न्यूट्रॉन जैसे कणों में द्रव्यमान यानि वजन होता है जबकि फोटॉन में नहीं होता है। यह एक गुत्थी थी की आखिर कुछ कणों में वजन होता है कुछ में नहीं आखिर ऐसा क्यों होता है? इस गुत्थी को पीटर हिग्स और पाँच अन्य वैज्ञानिकों ने साल 2012 में सुलझाने की कोशिश किया, उन्होनें हिग्स बोसान का सिद्धांत दिया उनके सिद्धांत के मुताबिक बिग बैंग के तुरंत बाद किसी भी कण में कोई वजन नहीं था जब ब्रह्माण्ड ठंडा हुआ और तापमान एक निश्चित सीमा के नीचे गिरता चला गया तो शक्ति की एक फील्ड पूरे ब्रह्माण्ड में बनती चली गई उस फील्ड के अंदर बल था और उसे हिग्स फील्ड के नाम से जाना गया। उन फील्डस के बीच कुछ कण थे जिनको पीटर हिग्स के सम्मान में हिग्स बोसोन के नाम से जाना गया। इसे ही गॉड पार्टिकल भी कहा जाता है उस सिद्धांत के मुताबिक जब कोई कण हिग्स फील्ड के प्रभाव में आता है तो हिग्स बोसोन के माध्यम से उसमें वजन आ जाता है जो कण सबसे ज्यादा प्रभाव में आता है, उसमें सबसे ज्यादा वजन होता है और जो प्रभाव में नहीं आता है उसमें वजन नहीं होता है उस समय तक सिर्फ यह अनुमान था कि हिग्स बोसोन नाम का कण ब्रह्माण्ड में मौजूद है लेकिन जुलाई 2012 में स्विटजरलैंड में वैज्ञानिकों ने हिग्स कण के खोजने की घोषणा की।

### गॉड पार्टिकल क्यों अहम है ?

हमारी इस दुनिया की रचना में भार या द्रव्यमान का खास महत्व है, भार या द्रव्यमान वह चीज है जिसको किसी चीज के अंदर रखा जा सकता है, अगर कोई चीज खाली रहेगी तो उसके परमाणु अंदर में घूमते रहेंगे और आपस में जुड़ेंगे नहीं जब परमाणु आपस में जुड़ेंगे नहीं तो कोई चीज बनेगी नहीं। जब भार आता है तो कण एक दूसरे से जुड़ता है जिससे चीजें बनती हैं। ऐसा मानना है कि इन कणों के आपस में जुडनें से ही चाँद, तारे, आकाशगंगा और हमारे ब्रह्माण्ड की अन्य चीजों का निर्माण हुआ है। अगर कण आपस में नहीं मिलते तो इन चीजों का अस्तित्व नहीं होता और कणों को आपस में मिलाने के लिये भार जरुरी है।

### यूँ नाम पडा गॉड पार्टिकल

अमरीका के एक वैज्ञानिक लेऑन लीडरमैन नें 1993 में एक पुस्तक लिखी थी उस पुस्तक में उन्होंनें कणों के द्रव्यमान और परमाणु के बनने की प्रक्रिया को समझाया था उन्होनें किताब का नाम The Goddamn Particle रखा था, लेकिन प्रकाशक को यह नाम पसंद नहीं आया था, तो उन्होनें इसका नाम बदलकर The God Particle कर दिया । इस तरह से इसको गॉड पार्टिकल कहा जाने लगा, इसका भगवान से कोई लेना देना नहीं है। दरअसल इंग्लिश के शब्द Goddamndks गुस्सा या चिड़चिड़ाहट को व्यक्त करने के लिये इस्तेमाल किया जाता है। इसी चीज को ध्यान में रखते हुए लीडरमैन नें गॉडडैम का इस्तेमाल किया ताकि वह यह दिखा सकें की इस कण को खोजने में कितनी परेशानी का सामना करना पड़ा।

# भौगोलिक भ्रमण

बेनी प्रसाद डेहरिया
अतिथि व्याख्याता (भूगोल)
beniprasadd@gmail.com

## सारासोर

**प्रस्तावना -**

शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर से लगभग 60 किलोमीटर अम्बिकापुर – बनारस मार्ग भैंसामुण्डा से 15 किलो मीटर की दूरी पर महान नदी के तट पर सारासोर नामक स्थान है। यहाँ पर महान नदी दो पहाड़ियों के बीच से बहने वाली जलधारा के रूप में देखी जा सकती है। जल धारा के मध्य एक छोटा टापू है, जिस पर भव्य मंदिर निर्मित है। जिसमें देवी दुर्गा एवं सरस्वती की प्रतिमा स्थापित है। इस मंदिर को गंगाधाम के नाम से जाना जाता है। सारासोर बहुत ही मनोहारी है वहाँ के शैलें, वन के वृक्ष, पशु–पक्षी, वनस्पतियां इत्यादि दृष्टिकोण से भौगोलिक अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है।

**भौगोलिक यात्रा -**

महाविद्यालय से लगभग प्रातः 09 बजे छात्र–छात्राएं एकत्रित हो गये और फिर बस परिवहन साधन से प्रातः 09:30 पर सारासोर के लिए रवाना हो गये, छात्र और छात्राओं एवं महाविद्यालय स्वंय जो गाइड के रूप में गये कुल 55 लोग भौगोलिक भ्रमण में गये हुए थे। सारासोर तक की यात्रा लगभग 1 घण्टे 30 मिनिट में पूरी की गयी। यात्रा के दौरान उक्त स्थान की विस्तृत जानकारी छात्रों को दी गयी थी।

**सारासोर का सामान्य परिचय -**

सारासोर की स्थापना और पता लगभग सन् 1994 में किया गया था। सारासोर में दो पहाड़ियों के बीच से होकर महान नदी प्रवाहित हो रही है, जिसका उद्गम स्थल शंकरगढ़ कुसमी के समीप है। सारासोर को स्तलोकी देवी का पुराना स्थान बताया जाता है, यहाँ कई देवी के मंदिरों का निर्माण कराया गया है। नदी के किनारे मतंगाड़ा, सुरइन पहाड़ अमोनी पहाड़ एवं करोड़ी पहाड़ है।

**स्थिति एवं विस्तार -**

छत्तीसगढ़ राज्य के सूरजपुर जिले में सारासोर स्थित है। सूरजपुर जिले का भौगोलिक स्थिति 23' 22.3 अंश अक्षांश और 82.85 अंश इष्ट देशांतर है।

**धरातलीय स्वरुप एवं जल प्रपात -**

सारासोर का धरातल असमतल है, यहाँ की भूमि ऊबर–खाबड है, जहाँ पर पहाड़ों एवं पठारों का विस्तार है। यहाँ की चट्टानें अग्नेय एवं अवसादी प्रकार के है। यहाँ महान नदी की गहराई अत्यधिक है लोगों का कहना है कि इसकी गहराई को कई बार नापने का प्रयास किया गया है। किन्तु आज तक गहराई नापा नहीं जा सका है। जल का प्रवाह भी तीव्र है।

**जलवायु -**

इस क्षेत्र की जलवायु और सारासोर की जलवायु शीतोश्ण कटीबंधीय मानसूनी जलवायु है। यह क्षेत्र ठण्डे क्षेत्रों में गिने जाते है सर्दियों में यहाँ का तापमान 2 डिग्री सेग्रे. तक पहुँच जाता है। दिसम्बर और जनवरी में यहाँ बारिस हो जाती है। जो बंगाल की खाड़ी मे पश्चिमी विक्षोभ के कारण होती है। यहाँ के

सबसे गर्म माह मार्च और जून है।

**प्राकृतिक वनस्पतियां एवं जीव जन्तु -**

सारासोर क्षेत्र मे अनेक प्रकार की औषधियों और फल वाले पौधे पाये जाते है, साथ ही अन्य प्राकृतिक वनस्पतियां प्राप्त होती है– साल वृक्ष महुआ, पीपल, आम, बरगद, इमली, बेर, खमहार, सीसम, पलास, चार इत्यादि। इस वन क्षेत्र में –हाथी, भालू चीता, हिरण, खरगोश, बंदर, बारहसिंगा, सियार ,पशुओं के साथ–साथ पक्षियां भी पाये जाते है–मोर जंगली चिड़ियां, मैना, तीतर, इत्यादि।

**मिट्टियां -**

सारासोर में लाल–पीली रेतेली मिट्टी पाई जाती है। पहाड़ियाँ भी हर वर्ष नई मिट्टी प्रदान करते है।

**सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्वरुप -**

सारासोर स्थान के समीप कुछ गांव बसे हुए है, जो कृषि एवं पशुपालक है, जो धान, मक्का, मुंगफली, गेंहु उरद, अरहर, चना सरसों आदि के साथ–साथ सब्जियां भी उगाते है। यहाँ के लोगों में धार्मिक आस्था देखने को मिलती है। ये लोग क्षेत्रीय तीज–त्यौहारों को बहुत धूम–धाम से मनाते है। सारासोर में लोग पूजा अर्चना करने एवं मनोरंजनात्मक दृष्टि से भी जाते रहते है।

**सारासोर जाने के लिए परिवहन -**

यहाँ आने–जाने के लिए बस, कार, मोटर, साइकिल और पैदल सुविधा भी उपलब्ध है। क्योंकि स्थल तक आसानी से पहुँचने हेतु कच्चा और पक्का मार्ग है।

**आर्थिक स्वरुप -**

सारासोर पर कुछ दुकाने है। जो पर्यटन के लिए आने वाले लोगों द्वारा दुकानों से अपनी आवश्यक वस्तुओं का क्रय करते है जिससे उन्हे आर्थिक लाभ होता है।

**निष्कर्ष -**

उपरोक्त स्थल का भ्रमण कर छात्रों ने यह जानकारी एकत्रित किया हमारे चारो ओर प्राकृतिक की गोद में अनेक प्रकार की संसाधन, प्राकृतिक बनावट, धरातल का स्वरूप पहाड़ियों की बनावट यहाँ की शैलें, अपवाह तंत्र, पेड़–पौधे, जीव–जन्तु मिट्टियां, जलवायु आदि का अध्ययन कर अपने विषय से सम्बंधित जानाकारी एकत्रित किया। उनके मन में शोध के प्रति जागरूकता देखने को मिली, जो सफलता का सूचक है।

**भ्रमण की तस्वीरें**

# जिंदगी में रंग

जिंदगी शुरु होती है,
एक कोरे कागज से,
तब उसमें कोई रंग नहीं होता,
बीतता है जैसे–जैसे वक्त,
कागज में भरे जाते हैं रंग।

रंग होते हैं, कुछ चमकीले,
और कुछ गहरे...
उसमें उभर आते हैं,
कुछ ऐसे रंग भी...
जिसे हम रखना चाहते हैं
हमेशा समेट कर।
कुछ ऐसे भी होते हैं रंग,
मिटा देना चाहते हैं जिसे,
हमेशा के लिए।

जिंदगी के इन रंगों में,
जुड़ी होती है संभावनाएँ,
और इतने सारे रंगों से
कभी आकार लेता है सुन्दर चित्र।

इन कोरे कागजों में कभी
कुछ शब्द उतर आते हैं।
जो अक्सर दिलाते हैं याद,
किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना की।
और कभी...
दूर कर देते हैं किसी से।

सच कहूँ तो यही शब्द
कुरेद जाती हैं किसी की यादों को।
या बनकर रह जाती हैं,
कहानी किसी की।।

प्रिन्स कुमार सोनी
बी.एस.सी. (अंतिम वर्ष)

# मेरी महाविद्यालयीन शिक्षा

प्रिंस कुमार सोनी
बी.एस.सी. (अंतिम वर्ष)

विद्यालय की पढ़ाई पूरी करके, जब महाविद्यालय में प्रवेश लेते हैं तो एक बिल्कुल नया परिवेश मिलता है। यहाँ थोड़ी अधिक स्वतंत्रता मिलती है और गंभीरता भी पहले की तुलना में अधिक होती है। मैंने शास. रानी दुर्गावती महाविद्यालय में 2017 में प्रवेश लिया और बी. एस–सी. का नियमित छात्र रहा। यहाँ आकर मुझे नये शिक्षकों से पढ़ने और सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। आने से पहले मन में कई प्रकार की भ्रांतियाँ होती हैं, कोई कहता है कि कॉलेज रोज जाने की जरुरत नहीं होती तो कोई कहता है कि सब अपने मर्जी के मुताबिक करने की छूट होती है। लेकिन अगर सही मायने में पढ़ने के लिए प्रवेश ले रहे हैं तो यह एहसास जरुर होगा कि अगर एक दिन की भी पढ़ाई छोड़ते हैं तो बहुत पीछे चले जाते हैं। यहाँ पाठ्यक्रम भी बहुत विस्तृत होता है और एक अच्छी तैयारी की माँग होती है। यही कारण है कि महाविद्यालय में अक्सर कम प्रतिशत अंकों से छात्र पास होते हैं। पिछले कुछ वर्षों से प्राप्त होने वाले प्रतिशत में भी थोड़ी वृद्धि हो रही है।

महाविद्यालय में एक अच्छी सुविधा मुझे यह मिल पायी कि यहाँ पुस्तकालय है, जहाँ एक ही विषय की अनेकों किताबें उपलब्ध हैं जो कि अधिकांश स्कूलों में नहीं मिल पातीं। इन किताबों से अपने लिए आवश्यक सभी जानकारियाँ प्राप्त कर सकते हैं। सभी विषयों के लिए अलग–अलग सुविकसित प्रयोगशालाएँ हैं, जहाँ किताबों की सैद्धांतिक पढ़ाई को व्यवहारिक रुप से देख सकते हैं।

प्रारंभ में यहाँ यूनिफॉर्म का कोई प्रचलन नहीं था लेकिन 2019 में छात्रों के माँग किये जाने पर यह भी प्रारंभ किया गया है। अब महाविद्यालय के सभी विद्यार्थी एकरुपता में दिखाई पड़ते हैं। यह भी एक प्रकार का अनुशासन ही है। जब महाविद्यालय में प्रवेश लेते हैं, उसके बाद और उसके पहले के सोच में बहुत अंतर होता है। मेरा मानना है कि यह अंतर जरुरी भी है क्योंकि अब आप एक बड़े संस्थान में पढ़ने जा रहे हैं और यही वह समय है, जहाँ से प्रतियोगिताओं की शुरुआत हो जाती है। इन प्रतियोगिताओं में सफल होने के लिए, यह अनिवार्य है कि आप अच्छे से पढ़ाई करें और अपने ज्ञानकोष में वृद्धि करें।

अपनी पढ़ाई के अलावा राष्ट्र के सेवा की भावना को विकसित करने, समाज सेवा द्वारा व्यक्तित्व विकसित करने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई भी यहाँ संचालित है, जिसमें जुड़कर एक नयी दिशा मिलती है। मेरे जितने भी सहपाठी रा.से.यो. से जुड़े थे, उनमें एक अलग छवि नजर आती है। कार्यक्रम अधिकारी के साथ मिलकर श्रमदान हो या सात दिवसीय विशेष शिविर, सब में कुछ नया सीखने का अवसर प्राप्त होता है। मैं अपने विद्यालय स्तर से ही रा.से.यो. से जुड़ा था और यहाँ भी जुड़ा रहा लेकिन कुछ विद्यालयों में रा.से. यो. नहीं है, उन विद्यार्थियों को महाविद्यालय में रा.से. यो. से अवश्य जुड़ना चाहिए। यह आपके व्यक्तित्व विकास में बहुत सहायक होगा। व्यक्तित्व विकास का ही दूसरा पहलू छात्र संघ भी है, जो आपके नेतृत्व क्षमता को विकसित करता है। यदि अवसर मिल पाये तो इसमें भी अवश्य जुड़ना चाहिए और सही ढंग से कार्य करना चाहिए।

किसी ने ठीक ही कहा है कि 'नो नॉलेज, विदाउट कॉलेज'। अब आप महाविद्यालय आ ही गये हैं तो तन्मयता से अपने लक्ष्य की ओर चलते रहिए। शास. रानी दुर्गावती महाविद्यालय में इतने सारे अच्छे अनुभव मिलेंगे कि अंत में व्यक्त करने के लिए शब्द कम पड़ जायेंगे। ।।धन्यवाद।।

# हमर गाँव

अशोक कुमार
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

हमर कतका सुग्घर गाँव,
इहाँ हावय रूख–राई के छाँव।
किसान अन्न उपजावे,
अपन मेहनत ले जहाँ चलावे।
बनी–बुती करके करे कमाई,
जग के आधार हे किसान भाई।
बरखा धोखा दे जाथे,
किसान सोच म पड़ जाथे।
तभो नइ मानय हार,
तब छा जाही चारो कोती अंधियार।
मेहनत कर के करे उजियार,
गाँव गली के लइका होवे होसियार।
सबो मिल बढ़बो आगे,
हरियर खेती ल देख के किसान के मन हरियागे
कतका सुग्घर लहरावथे, खेती–खार गली–गांव
अइसनहे सुग्घर हवे हमर गाँव...

"

धूप भी खोज रही है, एक मुट्ठी छाँव
सारा शहर छान मारा, अब चली है गाँव

# सपनों का वाड्रफनगर

कु. सुषमा कुशवाहा
बी.एस.सी. (प्रथम वर्ष)

वाड्रफनगर, छत्तीसगढ़ राज्य के बलरामपुर जिले में स्थित एक छोटी सी तहसील है जो सरगुजा संभाग के अंतर्गत है। वाड्रफनगर की सीमा से बहुत नजदीक ही उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश राज्य की सीमाएँ लगी हुई हैं, इसलिए इस क्षेत्र में संस्कृति व बोलियों में विविधता पाई जाती है। वैसे मुख्यतः यहाँ छत्तीसगढ़ी व हिन्दी बोली जाती है और उसके साथ–साथ क्योंकि यह नगर उत्तर प्रदेश और मध्य–प्रदेश के नजदीक है तो उन राज्यों की बोलियों का प्रभाव भी देखने को मिलता है। यह एक छोटा सा शहर है, यहाँ की आबादी जनगणना 2011 के अनुसार 6048 है और यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि व वानिकी पर आधारित है।

वाड्रफनगर एक छोटा शहर होने के साथ–साथ एक तहसील भी है, जहाँ बहुत से कार्य किये जाते हैं। यह एक नगर पंचायत है, जो नगरीय प्रशासन या स्थानीय प्रशासन से संबंधित कार्यो को करते हैं व नगर को व्यवस्थित एवं स्वच्छ रखने का कार्य करते हैं। वाड्रफनगर में पुलिस चौकी की भी व्यवस्था है। यहाँ जिले का अधिकतम छात्र–छात्राओं वाला महाविद्यालय स्थित है, जिसका पूरा नाम शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर है। वर्तमान में इस महाविद्यालय में 1034 छात्र–छात्राएँ (बलरामपुर जिले में सर्वाधिक) अध्ययनरत हैं। वक्त अच्छा बदला लेता है, जो वक्त को बर्बाद करता है तो वक्त भी उसे बर्बाद कर देता है। वाड्रफनगर में 100 बिस्तरीय शासकीय अस्पताल भी है, जहाँ इलाज के लिये आस–पास के ग्रामीण व नगर के नागरिक आते हैं। इस शहर के नजदीक से खरहरा नदी गुजरती है, जो एक धार्मिक स्थल व पिकनिक स्पॉट है। छठ पूजा के दौरान यहाँ महिलायें पूजा के लिये जाती हैं और यहीं पर एक मंदिर भी है, जिसके नाम इस नदी के नाम पर ही रखा गया है (खारहरा मंदिर)। यहाँ से 60 कि.मी. दूर रकसगंडा वाटरफॉल है जो एक दर्शनीय स्थल है, जहाँ दूर–दूर से पर्यटक घूमने के लिये आते हैं। यह वाटरफॉल

> वक्त अच्छा बदला लेता है।
> जो वक्त को बर्बाद करता है,
> तो वक्त भी उसे बर्बाद कर देता है।

# अपने सपनों को पूरा करेंगे

कु. अंशु कुशवाहा
बी.एस.सी. (प्रथम वर्ष)

ऊँची उड़ान हम भरेंगे,
अपने सपनों को सच करेंगे।
राह में मुश्किल आयेंगे,
चट्टानों से टकरायेंगे।
नदियों की तरह,
स्वच्छंद बहते चले जायेंगे।
ऊँची उड़ान हम भरेंगे,
अपने सपनों को पूरा करेंगे।
सतत् परिश्रम करते जायेंगे,
अपनी मंजिल को पायेंगे।
मतलब की इस दुनिया में,
अपनी अलग पहचान बनायेंगे।
ऊँची उड़ान हम भरेंगे,
अपने सपनों को पूरा करेंगे।।

मंजिल पर पहूँचना है, तो कभी राह के काँटो से मत घबराना
क्यूँकि काँटे ही तो बढ़ाते हैं, रफ्तार हमारी कदमों की।

सत्य को कहने के लिये,
किसी शपथ की जरूरत नहीं होती।
नदियों को बहने के लिए,
किसी पथ की जरूरत नहीं होती।
जो बढ़ते है जमाने में अपने मजबूत इरादे से,
उन्हें अपनी मंजिल पाने के लिये किसी रथ की जरूरत नहीं होती।

रीना मरकाम
बी.ए. (अंतिम वर्ष)

हमें जो मिलता है उससे हम जीविका बना सकते हैं
लेकिन हम जो देते हैं वह जीवन बनाता है। – आर्थर एशे

# शैक्षणिक भ्रमण (रामगढ़)

संदीप कुमार यादव
बी.एस.सी. (अंतिम वर्ष)

शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय से 14 जनवरी 2020 में शैक्षणिक भ्रमण के लिए रामगढ़ लगभग 150 छात्र–छात्राएँ गये थे। रामगढ़ एक प्राचीन ऐतिहासिक तीर्थ स्थल है। यह सरगुजा के ऐतिहासिक स्थलों में सबसे प्राचीन है।

रामगढ़ अंबिकापुर–बिलासपुर मार्ग पर स्थित है, जिसे रामगिरी के नाम से भी जाना जाता है। यह एक ऊँचा चोटीनुमा पर्वत है।

रामगढ़ भगवान श्रीराम और कालिदास से संबंधित है, इसी कारण से यह अनेक शोध का केन्द्र बना हुआ है। एक प्राचीन मान्यता के अनुसार वनवास के दौरान श्री राम, लक्ष्मण और माता सीता भी यहाँ निवास किये थे। रामगढ़ में लक्ष्मण गुफा और सीता बेंगरा स्थित है। यहाँ राम, लक्ष्मण और सीता मंदिर भी स्थित है। पहाड़ी के ऊपर एक बड़ा तालाब स्थित है, जो कि बहुत ऊँचाई पर होने के बावजूद भी पानी से भरा रहता है। ऊपरी पहाड़ी पर जाने के लिए प्रारंभ में लगभग 7 किमी पैदल चलने के बाद 836 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती है। यह भी लगभग 3 किमी का पहाड़ है, जो कि दर्शनीय है। रामगढ़ में कई छोटी–छोटी गुफाएँ भी हैं, जिनमें छोटे–छोटे मंदिर स्थित हैं, जो अत्यंत सुंदर दिखाई पड़ते हैं। पहाड़ी के ऊपर से नीचे देखने पर भी काफी मनोरम दृश्य दिखता है। ऊपर की ओर केले के पेड़ भी लगे हैं और बहुत अधिक बंदर भी देखने को मिलते हैं। इस प्रकार अनेक विशेषताओं वाला रामगढ़ की पहाड़ी है।

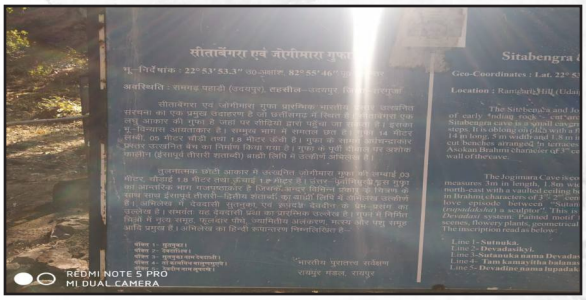

# ग्रीन हाउस प्रभाव

सूरजलाल सिंह
बी.ए. (अंतिम वर्ष)

ग्रीन हाउस एक प्रकार का विकिरण प्रभाव है, जिसके कारण पृथ्वी के वायुमंडल के निचले स्तर में तापमान में वृद्धि हो रही है। पृथ्वी पर जीवन को बनाये रखने के लिए प्राकृतिक रुप से ग्रीन हाउस प्रभाव की मौजूदगी आवश्यक है, जो कि प्राकृतिक रुप से वायुमंडल में उपस्थित होता है।

**प्रस्तावना –**

वातावरणीय प्रदूषण के कारण से पृथ्वी के तापमान में वृद्धि हुई है, जिससे महासागरों के तापमान में भी वृद्धि हुई है, परिणामस्वरुप ग्रीन हाऊस प्रभाव भी बढ़ा है। ग्रीन हाउस प्रभाव की वजह से अवरक्त विकिरणों को अवशोषित और उत्सर्जित किया जाता है, जिससे वायुमंडल गर्म बना रहता है।

**ग्रीन हाउस प्रभाव एवं ग्लोबल वार्मिंग –**

वायुमंडल में मौजूद मुख्य ग्रीन हाउस गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड, जल वाष्प, मीथेन, ओजोन, नाइट्रस ऑक्साइड आदि आते हैं। पृथ्वी के वायुमंडल का औसत तापमान 25 डिग्री सेल्सियस होता है, जो कि ग्रीन हाउस प्रभाव के बिना घटकर बहुत कम हो जाता है, जिसमें जीवन यापन संभव नहीं होता है। जीवाश्म ईंधन के दहन के कारण, प्रदूषण, वनोन्मूलन एवं अन्य मानवीय गतिविधियों के कारण से उत्सर्जित ग्रीन हाउस गैसों से पिछले कुछ दशको में ग्रीन हाउस प्रभाव बहुत अधिक बढ़ा है। इसी के कारण ग्लेशियर पिघलते जा रहे हैं, जिससे महासागरों का जल स्तर तेजी से बढ़ रहा है। गर्म जलवायु की वजह से वर्षा की कमी और वाष्पीकरण की घटना में वृद्धि हुई है। मौसम की स्थिति भी अब काफी बदल गया है और गर्मी भी अधिक बढ़ गयी है।

**निष्कर्ष –**

वर्तमान में कोई भी ऐसा देश नहीं रह गया है, जो ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से ग्रसित नहीं है। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को रोककर ही इस भीषण समस्या से बचा जा सकता है। इसके लिए सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा सामूहिक रुप से कड़े फैसले लिए जाने आवश्यक हैं। इसके लिए हमें नवीनीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने और वनों के उन्मूलन को रोकने की आवश्यकता है, साथ ही वृक्षारोपण को भी बढ़ावा देना चाहिए।

# धरती का सम्मान

स्मिता
बी.एस.सी. (अंतिम वर्ष)

❖ ईश्वर का था सृष्टि को यह प्यारा वरदान।
उसने था भेजा यहाँ बुद्धिमान इंसान।।

❖ पहले सब कुछ ठीक था, थे धरती के शान।
प्रकृति साथ उसके खड़ी, देती सब कुछ दान।।

❖ किया बुद्धि का उपयोग जब, आया नव विज्ञान।
भाँति–भाँति की खोज से, प्रगति चढ़ी परवान।।

❖ उन्नति का नित नव शिखर, लाता नया विहान।
दिल से सब विज्ञान का, लोग करे गुणगान।।

❖ बढ़ती जाती भूख नित, और बढ़ा अभिमान।
लालचवश कुंठित हुआ, मानव का तन ज्ञान।।

❖ शोषण करता धरा का, बिना दिये यह ध्यान।
अति दोहन लेगा कभी, धरती माँ के प्राण।।

❖ बनाये रखना है यदि संतुलन धरा का, मध्यम करें अपनी उड़ान।
पृथ्वी पर जो संपदा है, उसका रखिये मान।।

❖ प्रकृति का दोहन रूके, बात धरे यह ध्यान।
बदला लेगी यदि प्रकृति, आयेगा तबाही और तूफान।।

❖ बदलें अब सब आदतें, चलायें नया अभियान।
जितना हमने धरती से लिया, वापस देंगे दान।।

❖ संसाधन रक्षण करें, दे दें जीवनदान।
जब लौटे वैभव पुनः, धरा करेगी अभिमान।।

"
पृथ्वी हम सबका घर है,
इसकी सुरक्षा हम सब पर हैं।

# मेरा गाँव

चन्द्रदेव सिंह
बी.एस.सी. (अंतिम वर्ष)

मैं शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर में बी.एस.सी. (अंतिम वर्ष) का छात्र एवं राष्ट्रीय सेवा योजना का स्वयं सेवक हूँ। मैं आप सभी को अपने गाँव के विषय में अवगत कराना चाहता हूँ। मेरे गाँव का नाम ग्राम– रजखेता यह तहसील–वाड्रफनगर से लगा हुआ है, जिसकी दूरी 02 किलोमीटर है। हमारा गाँव चारों ओर घने जंगलों से घिरा हुआ है, जिसके कारण यहाँ पानी का स्त्रोत अच्छा है। हमारे गाँव की जनसंख्या मतदाता सूची के अनुसार 1800 है। यहाँ की शिक्षा दर लगभग 30 प्रतिशत है। वर्तमान में शिक्षा के लिए तीन प्राथमिक एवं दो माध्यमिक शाला हैं। आज की युवा पीढ़ी शिक्षा ग्रहण कर रही है, जिससे की आने वाले समय में शिक्षा दर में सुधार आ सकता है। हमारे गाँव में अनेक जाति–धर्म को मानने वाले लोग निवास करते है, जिसमें कि प्रमुख जाति के रूप में आदिवासी गोंड़ जनजाति निवास करती है। यहाँ के लोग स्वच्छता के प्रति जागरूक है, इसलिये यहाँ के ज्यादातर लोग शौचालय का उपयोग करते हैं, कुछ लोग ही खुले जगहों पर शौच के लिए जाते हैं। इन सभी के कारण यहाँ बीमारी की समस्या हमेशा बनी रहती है। वर्तमान समय में स्वच्छ भारत योजना के तहत शौचालय का निर्माण किया गया है, लेकिन गाँव वाले इस शौचालय को ज्यादा महत्व नहीं देते है, क्योंकि यहाँ के रहने वाले लोग अधिकतर अशिक्षित है। इनका मुख्य व्यवसाय कृषि एवं मजदूरी है, जिससे अपना भरण– पोषण करते है। इस गाँव में एक नर्सरी का निर्माण किया गया है, इस नर्सरी में भिन्न–भिन्न प्रकार के पौधा तैयार किये जाते हैं।

"दूसरो को जानना ज्ञान है, स्वयं को जानना आत्मज्ञान है।।

# राष्ट्रीय सेवा योजना का मेरे जीवन में महत्व

देवनंदन कुमार
बी.एस.सी. (अंतिम वर्ष)

मैं शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर में कक्षा बी.एस.सी. –अंतिम वर्ष का छात्र हूँ। मैने जब महाविद्यालय में प्रवेश लिया, उस समय संचालित रा.से.यो. की गतिविधियों से प्रेरित होकर पंजीयन कराया। तत्पश्चात् रा.से.यो. से इन तीन वर्षों में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला । जब मुझे नियमित गतिविधियों के साथ सात दिवसीय विशेष शिविर में जाने का मौका मिला तब मेरी दिनचर्या के साथ–साथ मेरा बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक या यूँ कहें तो सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हुआ। इस शिविर में रहकर मैंने समय के महत्व को जाना। इस प्रकार मैं एक स्वयं सेवक के रूप में कार्यरत् रहा। मेरी कार्यभूमिका और सहभागिता को देखते हुये मुझे तृतीय वर्ष में राज्य स्तरीय सात दिवसीय विशेष शिविर रायगढ़ में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। यह शिविर मेरे जीवन का बहुत ही महत्वपूर्ण सफर रहा है। जो की मेरे लक्ष्य को पाने के लिये विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया। आज मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि मैने जो इन तीन सालों में राष्ट्रीय सेवा योजना से जुडा रहा एवं हमारे कार्यक्रम अधिकारी के समक्ष रह कर जिस कार्य और शिक्षा को मैंने ग्रहण किया, वह मेरे लिये महत्वपूर्ण रहा है। मेरे अन्दर समाज सेवा के प्रति जो भाव विकसित हुआ है 'आज मैं निस्वार्थ भाव से समाज सेवा के प्रति हमेशा अग्रसर रहूँगा'। अतः मैं यह बात आप सभी तक पहुँचाना चाहता हूँ कि यदि आप महाविद्यालय में अध्ययनरत् हैं तो राष्ट्रीय सेवा योजना से अवश्य जुड़ें। मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि आपके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होगा।

> अंधकार को क्यों धिक्कारें, अच्छा हो एक दीप जलाएँ।

# छात्रों और युवाओं के लिये प्रेरणा

ओम प्रकाश यादव
बी.एस.सी. (अंतिम वर्ष)

मैं मानता हूँ कि छोटा लक्ष्य एक अपराध है। मैं अपने जीवन में एक महान लक्ष्य रखूँगा और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये कठिन परिश्रम करूँगा, मैं लगातार ज्ञान प्राप्त करता रहूँगा, मै मेहनत करूँगा, मेहनत करूँगा, मेहनत करूँगा। मैं लक्ष्य प्राप्ति के लिये धैर्य रखूँगा।

1. मैं ईमानदारी से काम करूँगा और ईमानदारी से सफलता प्राप्ति करूँगा।
2. मैं अपने परिवार का एक अच्छा सदस्य, समाज का अच्छा सदस्य, अपने राज्य का अच्छा सदस्य, राष्ट्र का अच्छा सदस्य और विश्व का एक अच्छा सदस्य बनूंगा।
3. मैं सदैव सभी जाति, धर्म, भाषा, सम्प्रदाय तथा राज्य को साथ लेकर बिना किसी भेदभाव के सभी के जीवन को बचाने तथा समाज को बेहतर बनाने का प्रयास करूँगा। मैं चाहे जो भी हूँ, एक विचार मन में जरूर आयेगा, 'मैं आपके लिये क्या कर सकता हूँ'।
4. मैं किसी को शराब, धुम्रपान और जूँए की लत में नही पडने दूँगा। मैं कम से कम 05 लोगों को नशे की लत से छुटकारा दिलाने और उन्हें अच्छा जीवन जीने में मदद करूँगा।
5. मैं समय के महत्व का ख्याल हमेशा रखूँगा, मेरा ध्येय होगा मेरे उड़ान भरने के दिनों को व्यर्थ बीतने न देना।
6. मैं अपने आस–पास में कम से कम 05 पेड़ लगाऊँगा और उन्हें बड़ा करूँगा। मैं सदैव अपने गाँव शहर और राज्य को स्वच्छ बनाये रखने के लिये कार्य करूँगा ताकि मेरी धरती साफ और हरी–भरी रहे। मैं 2030 तक ऊर्जा स्वतंत्रता हासिल करने के लिये बेहतरीन प्रयास करूँगा।
7. अपने देश के युवा के रूप में मै अपने सभी कार्यों में सफलता के लिये काम करूँगा और साहस के साथ काम करूँगा तथा दूसरों की सफलता का भी आनंद उठाऊँगा।
8. मैं उतना ही युवा हूँ, जितना की मेरे विश्वास और उतना बुढ़ा, जितना की मेरा शक। इसलिये मैं अपने हृदय में विश्वास का दिपक जलाऊँगा। मेरा देश मेरे हृदय में उड़ान भर रहा है और राज्य तथा राष्ट्र का गौरव बढ़ाऊँगा।

> सम्मान से जीने का सबसे महान तरीका है कि
> हम वो बनें जो होने का हम दिखावा करते हैं।

# साहस और एकता

सुनीता यादव
बी.ए. (द्वितीय वर्ष)

एक राजपूत घराने में एक लड़की का जन्म हुआ। उसके पैदा होते ही वे लोग जो लड़कियों के जन्म के बारे में घिनौने सोच रखते थे, उनके जीवन में खलबली मच गई। उनके जन्म से राजपूत घराने में खुशियाँ मनाई गयी, सब लोगों के साथ समारोह मनाया गया। राजपूत घराने की खुशियों में वे लोग शामिल नही हुए, जो पुत्री जन्म को अशुभ मानते थे। उत्सव में बहुत सारे पटाखे जलायी गई, तरह–तरह के नाच गाने हुये। वहाँ उपस्थित सभी नाच–गा रहे थे और मस्ती में सब आत्ममुग्ध हो गये थे। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे कोई देवी स्वयं बालरूप में अवतरित हुई हो। उस कन्यारत्न का नामकरण हुआ तथा उसका नाम राजमोहनी रखा गया।

कुछ साल बीत गया, अब वह बड़ी हो गई धीरे–धीरे समय बितता गया दिन बदलते गये, लोगों को पता नहीं चला, राजमोहनी इतनी तेजी से बड़ी हो गई। वहाँ उसने खुब मन लगाकर पढ़ाई किया और उन्हे अनेक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।अपनी आगे की पढ़ाई के लिए वह शहर गयी। उसकी पढ़ाई पूरा होने पर वह गाँव वापस लौटी तो उसने पाया की सारा गाँव तहस–नहस हो गया था, अब पहले जैसा वहाँ कुछ भी शेष नहीं था। इसी के साथ–साथ उसका सारा परिवार बिखर गया था।

अब वह विवाह के योग्य हो गई थी परंतु परिवार की स्थिति खराब होने की वजह से राजमोहनी का विवाह किसी गरीब घर के लड़के से हो गया और वह लड़का शराबी तथा जुआ खेलने वाला था। उस गाँव में अधिकांश लड़के इसी तरह के थे वे दिन–रात शराब व जुआं में मस्त रहते थे।उनको घर में खाने–पीने की कोई परवाह नहीं थी। घर आते तो अपनी पत्नी, माँ, बहन से लड़ाई, मार–पीट शुरू कर देते थे । राजमोहनी पहले से ही साहसी एवं सोच समझ कर कदम उठाने वाली लड़की थी तथा कोई भी काम सावधानी पूर्वक करती थी, उसने अपने पति को सुधारने तथा अपने घर व अपनी तरह अनेकों लोगों की स्थिति को सुधारने का निश्चय किया। वह पहले अपने पति को सुधारने का प्रयास करती है, लेकिन उससे कोई फायदा नहीं हुआ।

उसका शराब पीना कम नहीं हुआ, फिर भी अपने प्रयास को उन्होनें कम नहीं किया तथा उसने अपने जैसे तीन–चार औरतों को इकट्ठा करके उन्हें समझाया, उनमें साहस पैदा किया और अन्य महिलाओं को साहसी बनाने का सुझाव दिया तथा सभी को अपने परिवार की सुरक्षा करने का प्रण कराया। दूसरे दिन जब वे सब इकट्ठा हुएं तो राजमोहनी ने सबको कहा की उनमें से किसी के भी पति जब घर आये और मार–पीट शुरू किया तो तुम अपने घर से एक बर्तन लेकर उसे बजा देना, जिसे सुनकर दूसरी औरत बजायेगी फिर तीसरी इस तरह से हम एक साथ एक जुट हो जायेंगे और उसे समझायेंगे।

यहि प्रक्रिया सभी दुहराने लगे जिससे दिन–प्रतिदिन लोगो में सुधार होते गया और आज वह गाँव शराब व जुआं काफी हद तक दूर है तथा महिलाओं की स्थिति सुधर गई। अब वे खुशहाल जिन्दगी के साथ शान और शौकत का अनुभव करती हैं।

# मेरी किताबें

विकेश कुमार
बी.एस.सी. (प्रथम वर्ष)

महिनों से खुली ही नहीं,
बस सहेज रखे हैं अलमारी में,
बंद सी पड़ी, धूल से लिपटी
मेरी किताबें मुझे निहारती।
कुछ पल इन्हें खोल तुम बैठ जाओ,
मोबाइल की दुनिया से हट,
थोड़ी देर मुझमें भी खो जाओ।
हर बात तुमसे कह जाऊँगी,
प्रकृति की छटा दिखाऊँगी...
झरने बहना,
परियों की कहानियाँ सुनाऊँगी,
तुम्हें हर बात सिखाऊँगी,
बस कुछ पल मेरे साथ गुजारो,
तुम्हें नयी दुनिया की सैर कराऊँगी।।

//
किताब ही व्यक्ति के जीवन का
आधार हैं...

# भू-मण्डलीयकरण
# (Globalisation)

राकेश कुमार
बी.ए. (द्वितीय वर्ष)

शब्दकोश मे भूमंडलीयकरण शब्द 1960 के दशक में शामिल हुआ, परन्तु 1990 के दशक में सामान्य बोलचाल की भाषा में इसका प्रयोग प्रारंभ हुआ। वृहद् अर्थों में भू–मंडलीयकरण से तात्पर्य है, वैश्विक आधार पर एक आर्थिक एवं सांस्कृतिक नेटवर्क का विकास जो विभिन्न क्षेत्रों को आपस में तीव्रता से जोड़ रहा है तथा जिसका प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों एवं वहाँ के निवास करने वाले समुदायों पर देखा जा सकता है। आज के समय में हम भू–मंडलीयकरण से 1990 के दशक से ज्यादा परिचित हुए हैं, परंतु इसका विकास प्राचीन काल के व्यापार राजनैतिक प्रभुसत्ता, धर्म का प्रसार में एक वैश्विक दुनिया को कायम किया था।

18 वीं सदी का उतरार्ध तथा 19वीं सदी में वैश्विकरण का विकास–

1. क्लासिकल अर्थशास्त्रीयों द्वारा प्राच्यवादी धारणा को स्वतंत्र करते हुये Free Trade Policy का वकालत करने से वैश्विकरण को बढ़ावा।
2. साम्राज्यवाद ने 19वीं सदी में औद्यौगिक क्रांति तथा बाजार प्रतिस्पर्धा के लिये एशिया, अफ्रिका में औपनिवेशिक सत्ता कायम करना।
3. बाजार के विस्तार से वैश्विकरण को बढ़ावा।
4. आधुनिक यातायात संचार व्यवस्था ने भी वैश्विकरण को बढ़ावा दिया।
5. मुद्रा के आदान–प्रदान में स्वर्णमान को अपनाना।

20वीं सदी में 1919 से 1945 में भूमण्डलीयकरण को धक्का–क्योंकि स्वर्ण मानकों का टूटना, विश्वयुद्ध का प्रभाव तथा 1929–30 की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी में ग्लोबलाइजेशन को सीमित किया परंतु इन घटनाओं को क्लासिकल अर्थशास्त्र की मान्यताओं को धरासाई कर दिया, जिससे केनेशियन अर्थशास्त्र का उद्भव तथा नवीन अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का विकास हुआ जिसके अंतर्गत आई.एम.एफ., अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व बैंक और गैट की स्थापना हुई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि केनेशियन अर्थशास्त्र ने 1930 के विश्वव्यापी आर्थिक मंदी से उबरने के लिये महत्वपूर्ण भूमिका अदा किया परंतु 1970 के दशक का Oil Crisis के केंस की सिद्धांतो को असार्थक सिद्ध कर दिया, जिससे नये क्लासिकल अर्थशास्त्रियों के रूप में मिल्टन फ्रेडमैन तथा फ्रेडरिक हाऐक उभर कर सामने आते हैं, और इनके महत्व में वृद्धि होती है और फिर से मार्केट को फ्री करने के लिये नवउदारवादी आर्थिक मॉडल प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार नव उदारवादी आर्थिक नीति ने वैश्विकरण को बढ़ावा दिया।

भू–मण्यडलीयकरण को प्रेरित करने वाले कारक –

1. समाजवादी आर्थिक मॉडल का विघटन।
2. आर्थिक उदारीकरण की नीति।
3. तकनीकी विकास एवं संचार का विकास।

हाल ही के वर्षों में 2008–09 का सन प्राईम संकट तथा यूरोजोन संकट ने झटका दिया और 2020 में कोरोना महामारी ने भी अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था तथा ग्लोबलाइजेशन को बड़ा झटका दिया है, जिससे एक बार फिर से दुनिया का ध्यान बंद अर्थव्यवस्था की तरफ गया है परंतु वैश्विकरण ने अभी भी लोगों की दूरी कमकर एकता के सूत्र में बांधे रखा है।

# हमर सुघर
# बलरामपुर

**जनम अउ स्थिति**

भारत भुईयाँ के हिरदय हमर सुघर छत्तीसगढ़,
छत्तीसगढ़ महतारी हावय सरगुजा बड़ भाई,
सुरजपुर कोरिया संग होवे हे जनम भाई।
जसपुर हावय सुघर परोसी, हमर बलरामपुर के भाई,
मध्यप्रदेश बर परवेश दुआरी हे, बलंगी के पश्चिम छोर भाई,
उत्तरप्रदेश के जमो मन खे झापर पटेवा ले आईन,
झारखण्ड से मिताई जबर हे परोसी ऐ ह कहाईस ओ,
करक रेखा ह हिरदय ले जाथे अउ का–का हमन बताई ओ,
भउगोलिक स्थिति वे हावै इहाँ धरम के पोसाई ओ।।

**धारमिक अउ पराकिरीतिक स्थल**

पश्चिम छोर मा रिहन्द ह बहिथे, जईसे गंगा माई ओ,
सियाराम, लक्षमन आईन इहाँ रकसगंडा के तराई म ओ,
राकसहड़ा अउ रकसगंडा असुर मन ला मार गिराईन ओ,
चरन धरीन लक्षमन जी लक्षमन पाँव कहाईस ओ।
जवन पोखरी म चून्दी धोईन हे सीता मईया,
तेन ह सीतापोखरी कहाईस ओ,
नवा साल अउ मकर संक्रांति म लगथे इहा मड़ई ओ,
इहाँ के पानी अईसन हावै जईसे दूध कर धराई ओ,
बच्छराजकुँवर के धाम म जा के होथे दुख दूराई ओ,
धरम के धरती हावै इह मंदिर अउ नदियाँ परबत के उँचाई ओ।
बलंगी म हावै बंसीधर बाबा संगम राधा रानी ओ,
अढ़ाई सौ साल ले जादा हो गे ऐ मंदिर कर बनवाई ओ,
जनम असटमी, नवरातर, दशहरा परमुख तिहार मन खे मनाईन ओ,
दिवारी म अबड़ जोन ह जलथे अनकुठ में छप्पन भोग परोसाई ओ,
डिपाडिह के खण्डहर हावै खजुराहो शैली के निसानी ओ,
शिवलींग अउ महल मंदिर म गजब कर कलाकारी ओ।
पुरातत्व के हावै धरोहर सनरक्षण हमर जिम्मेदारी ओ,
पवईझरना मनोहर हावै निक लागै चिरई अउ पानी के किलकारी ओ,
कोढली गांव म कन्हार के पानी लेवै सुन्दरी कस अंगडाई ओ,
तातापानी कर गरम पानी ह जम्मो चरमरोग मिट जाई ओ,
इह निकलथे भूईयाँ के गरभ ले हे गजब के गरमाई ओ,
खनिज संपदा अबड हावै अबड़ नदियाँ के तराई ओ,
पर्यटन बर हावै सुगम सरल शांति कर परछाई ओ,
इहाँ के पर्यटन सदा बहार हावै सियाराम जी कर सरनाई ओ।।

धीरेन्द्र पाण्डेय
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

सरिता सिंह
बी.एस.सी. (अंतिम वर्ष)

# सोच को बदलो

सोच को बदलो, फिर सितारे भी बदल जायेंगे।
नजर को बदलो, नजारे भी बदल जायेंगे।।
कश्तियाँ बदलने की जरुरत ही नहीं,
दिशा को बदलो, किनारे बदल जायेंगे।।
कश्ती हर तूफाँ को पार कर जायेंगी।
बात बिगड़ी हुई भी बन जायेगी।
जब बढ़ेंगे ये कदम तो मंजिल खुद गले लग जायेंगी।।
तकदीर से सिकवा ना कर हौसले बुलंद रखना।
खुदा के इरादे भी बदल जायेंगे।
एक जिद्द कर जीतने की फिर जिन्दगी संवर जायेगी।।

सामने हो मंजिल तो, रास्ता मत मोड़ना।।
आँखो में हो सपने तो, उसे मत तोड़ना।।
हर कदम पर मिलेगी कामयाबी, बस सितारों को छूने के लिये,
जमीन मत छोड़ना।।

//

जीत और हार दोनों आपके सोंच पर निर्भर करता है।
मान लो तो हार और ठान लो तो जीत।

# जीवनदर्पण

1. मंजिल मिले या ना मिले, ये तो मुकद्दर की बात है,
   किन्तु कोशिश ना करें, ये तो गलत बात है।
2. जो करते हैं, वही करेंगे
   तो वही मिलेगा, जो मिलता रहा है।
   अगर कुछ नया पाना है तो नया करना भी पड़ेगा।
3. लक्ष्य बड़ा नहीं होता बल्कि लक्ष्य के लिये स्वयं को विवश करते रहना बड़ा होता है।
4. भाग्य पर भरोसा करने वालों को उतना ही मिलता है, जितना मेहनत करने वाले छोड़ देते हैं।
5. खुश रहने का सीधा एक ही मंत्र है, उम्मीद अपने आप से रखो किसी और से नहीं।
6. मेहनत इतनी खामोशी से करो कि सफलता उसकी शोर मचा दे।
7. जीवन के तीन मंत्र :–
   आनंद में– वचन मत दीजिये
   क्रोध में– जवाब मत दीजिये
   दु:ख में– निर्णय मत लीजिये
8. दुनिया में अच्छा इंसान खोजने से बेहतर है, खुद अच्छे बन जाओ,
   शायद आपसे मिलकर किसी की तलाश खत्म हो जाये।
9. इतना छोटा कद रखिए कि सभी आपके साथ बैठ सकें,
   और इतना बड़ा पद रखिए कि जब आप खड़े हों तो कोई बैठा न रह सके।
10. अपने माँ–बाप की गुलामी करने वाला इंसान,
    दुनिया का सबसे बड़ा बादशाह होता है।
11. "मैं सब जानता हूँ" यही सोच इंसान को,कुएँ का मेंढक बना देती है।
12. "आशा ही जीवन है।" (भ्वचम पे स्पमि)
13. आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।
14. मनुष्य का जीवन इसलिए है कि वह अत्याचार के लिये लड़े। –सुभाषचन्द्र बोस
15. जो व्यक्ति भाग्य के सहारे चलता है, वह आलसी होता है।
    व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माता स्वयं होता है।
    भाग्य बनता है– अटूट परिश्रम से, अच्छे कर्मों से,
    और भाग्य साथ देता है– आगे बढ़ने वाले व्यक्ति का। –डॉ० भीमराव अम्बेडकर
16. परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।
17. अदब सीखना है, तो कलम से सीखो,
    जब भी चलती है सर झुकाकर चलती है।
18. इंसान का सब कुछ छीन सकताहै,
    किन्तु ज्ञान एक ऐसी धरोहरहै,
    जिसे कोई भी नहीं छीन सकता।
19. इंसान को जब किसी के अच्छे गुण दिखाई दें,
    तो मन को कैमरा बना लेना चाहिए,
    और जब अवगुण दिखाई दें तो मन को आईना बना लेना चाहिए।
20. जब दूसरों को समझना कठिन हो तो स्वयं को समझा लेना ही बेहतर होता है।
21. शिक्षक एक ऐसा दीपक है, जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है।
22. झूठ बोलकर शाबासी पाने से बेहतर है, सच बोलकर निराशा प्राप्त करें।

सतरूपा पटेल
बी.एस.सी. (प्रथम वर्ष)

गलती नीम की नहीं कि वो कड़वा है,
खुदगर्जी जीभ की है कि उसे मीठा पसंद है।

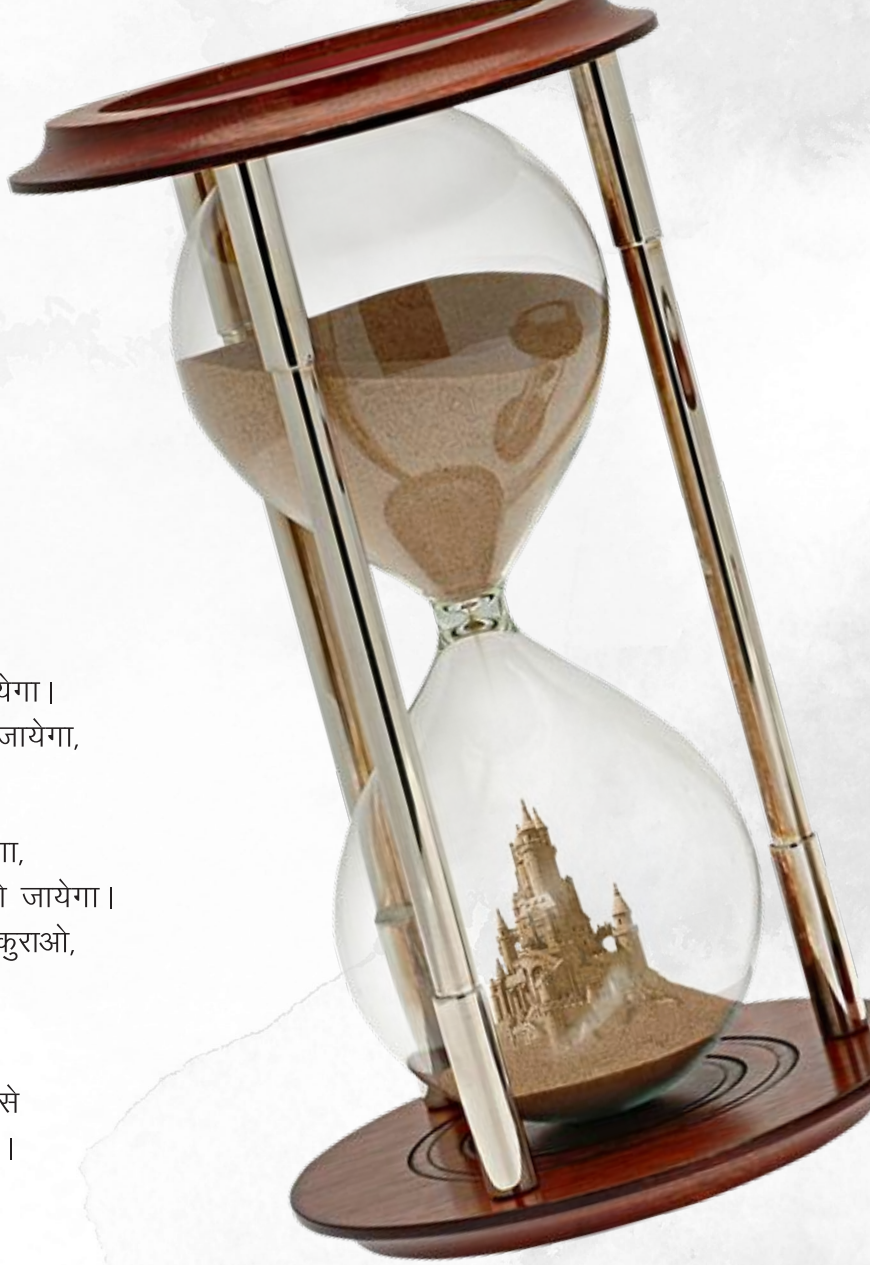

# ये वक्त भी बीत जायेगा...

- ये वक्त भी बीत जायेगा,
  कोरोना हारेगा और हिन्दुस्तान जीत जायेगा।
  जान बचेगी, जहान बचेगी कोरोना हार जायेगा,
  और ये वक्त भी बीत जायेगा।

- कभी सोचा नहीं था, ऐसा भी दिन आयेगा,
  सामान्य जिन्दगी है, वह उथल–पूथल हो जायेगा।
  मुस्कुराने का समय नहीं है, फिर भी मुस्कुराओ,
  उदासियों का ये मौसम भी बीत जायेगा,
  ये वक्त भी बीत जायेगा।

- कोरोना वायरस हमें मालूम है, तेरे नाम से
  तूने सारी दुनिया में तबाही मचा दिया है।
  किन्तु बहुत जंग जीते हैं हमारे भारत ने
  और यह कोरोना से भी जीत जायेगा,
  ये वक्त भी बीत जायेगा।

- कभी सोचा नही था खुशियों में भी दूरियाँ बनाने पडेंगे,
  ऐसा भी दिन आयेगा, ये वक्त भी बीत जायेगा।
  कुछ दिन की यह मजबुरी है, ये शक्ति बहुत जरूरी है,
  कोरोना से बचाव के जिम्मेदारी को निभाना बहुत जरूरी है।

- ये धरती माँ ने किया है तुम्हारा लालन,
  तु भी कर कुछ पालन, ये वायरस से भारत हारे ऐसा हो नहीं सकता,
  ये बुरा वक्त है, बीत जायेगा,
  फिर नया सवेरा आयेगा, ये वक्त भी बीत जायेगा।।

सोनापती आयम
बी.एस.सी. (अंतिम वर्ष)

# सुविचार

1. विद्यार्थी की सोच सकारात्मक होना चाहिए।
2. मनुष्य अपने परिस्थितियों का दास नहीं, उसका निर्माता, नियंत्रण कर्ता, स्वामी है।
3. भाग्य एक कोरा कागज है, जिसमें आप जो चाहो सो लिख सकते हो।
4. सच्चा मनुष्य वही होता है, जो गलती से भी मुँह से गलत वाक्य नहीं निकालते हैं।
5. चरित्र वह दीपक है, जो सूर्यास्त हो जाने और सभी रोशनियों के बुझ जाने के बाद भी आलोकित होती है।
6. पढ़ाई का सबसे अच्छा साधन है, सकारात्मक सोच को बढ़ाना।
7. संभव असंभव से पूछता है कि तुम्हारा निवास स्थान कहाँ है? उत्तर मिलता है कि ''निर्बलों के स्वपनों में''।।

# एक विचार

''नींद अपनी त्यागकर सुलाया हमको,
कष्ट अपने भुलाकर हँसाया हमको,
कष्ट न देना कभी माँ को,
जो भगवान के रूप में मिली हमको।''

''रूखी वाणी कड़वी भाषा,
पीड़ित करती है पर को,
अतः उचित है मानव मन को,
मधुर वाक्य बोले हर को।''

''माँ–बाप का अपमान कर,
बच्चों को हम अपने अपमान की अनुमति देते है।''

दो चीजों को कभी व्यर्थ नहीं होने देना चाहिए,
'अन्न के कण को' और 'आनंद के क्षण को',
मुस्कुराते रहिए,
कभी अपने लिये कभी अपनों के लिये।।

''जीयें ऐसे की जैसे कल ही हो अंत,
सीखें इतना जैसे कि जीवन हो अनंत।''

कु. सुनिता यादव
बी.ए. (अंतिम वर्ष)

# अनमोल वचन

1. संतोष सबसे बड़ा सुख है और असंतोष सबसे बड़ा दुःख इसलिए सुख चाहने वाले व्यक्ति को हमेशा संतुष्ट रहना चाहिये।
2. समय और समझ दोनों एक साथ खुश किस्मत लोगों को ही मिलते हैं क्योंकि अक्सर समय पर समझ नहीं आती और समझ आने पर समय निकल जाता है।
3. जीवन में दो ही व्यक्ति असफल रहते हैं, एक वे जो सोचते तो हैं पर करते नहीं, दूसरे वे जो करते हैं पर पहले सोचते नहीं।
4. आलस्य ही मनुष्य के शरीर का सबसे बड़ा शत्रु है।
5. आपसे प्रेम भले ही कोई ना करे, पर आप सभी से प्रेम करें।
6. दूसरों की गलतियों को ढूढ़नें से अच्छा, आप अपनी गलतियाँ ढूँढिए।
7. आत्महत्या करके आप अपने शरीर का नाश तो कर सकते हैं, लेकिन परमात्मा को नहीं।
8. फूल खिलने दो, मधुमक्खियाँ अपने आप पास आ जायेंगी। चरित्रवान बनो, जगत अपने आप मुग्ध होजायेगा।
9. सच्ची लगन को काटों की परवाह नहीं होती है।
10. विद्या का अंतिम लक्ष्य चरित्र निर्माण होता है।

संजय कुमार
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

# पहेलियाँ

**1** कागज का घोड़ा है,
धागे की है लगान,
धागा टूट जाये तो,
घोड़ा करता सलाम।

**2** तीन रंग का सुन्दर पक्षी,
नील गगन में भरे उड़ान,
यह सबकी आँखों का तारा,
सब करते इसका सम्मान।

**3** मध्य कटे तो बनूं कम,
अंत कटे तो हो जाऊँ कल,
जल्दी बताओ नाम मेरा?
मैं तुम्हारे पास हूँ हरदम।

**4** गोल मटोल रूप मेरा,
जिस पर लगे हैं। बाल
अंदर मीठा मेवा है,
रहता हूँ ऊँची डाल।

**5** यहाँ नहीं वहाँ नहीं,
बिकता है बाजार नहीं,
छीलो तो छीले नहीं,
कोड़ो तो गुठली नहीं।

उत्तर –
1. पतंग
2. तिरंगा
3. कलम
4. नारियल
5. ओला

# चुटकुले

विष्णु कुमार
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

1. मोनू – अगर तुम्हारे पैर पर, पैर पड़ जाये, तो तुम क्या करोगे?
सोनू – जी... सॉरी बोल दूँगा।
मोनू – फिर तुम्हें टॉफी दे, तो, क्या करोगे?
सोनू – दूसरे पैर पर, चढ़ कर फिर सॉरी बोल दूँगा,
ताकि दूसरा टॉफी भी मिल जाये।

2. ललिता – यार मैं विदेश जाना चाहती हूँ,
कैल्कुलेट करके बताओ कितने पैसे लगेंगे।
सावित्री – एक भी पैसा नहीं लगेगा।
सपने देखने के पैसे थोड़े लगते हैं।

3. विष्णु – यार उठ भूकंप आ रहा है!
पंचम – सोजा–सोजा घर तो मकान मालिक का गिरेगा,
हम तो किरायेदार हैं!

# भारत में महिलाओं की स्थिति

कु. नीरा कुशवाहा
बी.ए. (अंतिम वर्ष)

पहले वैदिक काल में भारतीय समाज में महिलाओं को बहुत सम्मान और आदर दिया जाता था। उन्हें सामाजिक, बौध्दिक और नैतिक रूप से पुरूषों के समान विकास के अवसर दिये जाते थे। वे जीवन में अपना रास्ता चुनने और जीवन साथी का चयन करने के लिये पूर्ण रुप से स्वतंत्र थी।

वे शादी से पहले पूरी शिक्षा प्राप्त करती थीं और साथ ही अपनी सुरक्षा के लिये सैन्य प्रशिक्षण भी लेती थी। हालांकि भारतीय समाज में महिलाओं के खिलाफ विभिन्न बुरे व्यवहारों के कारण मध्य युग में महिलाओं की स्थिति खराब हो गई। महिलाओं की स्थिति उस समय हीन हो गई जब वे घरों की सजावट की भूमिका निभाने वाली ही रह गईं। महिलायें लगभग पुरूषों की भावनाओं की गुलाम बन गईं और उन्हें पर्दे के पीछे रहने को मजबूर होना पड़ा। उन्हें शिक्षा और सम्पत्ति के अपने अधिकार छोड़ने पड़े। मुगल काल में महिलाओं की स्थिति और अधिक खराब थी, महिलाओं को जाति प्रथा और सती प्रथा जैसे बुरी प्रथाओं के नियमों का पालन करने के लिये मजबूर किया गया था। सती प्रथा, दहेज प्रथा, कन्या भ्रुण हत्या, आदि प्रथाएँ हावी हो गई और पुरूष प्रधान देश बन गया।

फिर से स्वतंत्र भारत में महिलायें पुरूषों के साथ पूर्ण समानता से रह रहीं है वे आदमी के गुलाम नहीं हैं और किसी पर निर्भर नही रहती। उन्हें शादी से पहले माता–पिता के साथ ही रहने के लिये मजबूर किया गया जबकी शादी के बाद पति के साथ।

''कोई भी राष्ट्र तब तक विकसित नहीं हो सकता है जब तक उस देश की महिलायें भी देश के विकास में कंधा मिलाकर न चलें।'' आजादी के कई वर्षों के संघर्ष के बाद यह बदलना शुरू हुआ जब महात्मा गांधी ने महिलाओं को आगे आने और स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने का आह्वान किया था।

''नारी में असीमित शक्ति होती है फिर भी समाज में अबलाही समझी जाती है।''

भारतीय नेताओं ने समाज में महिलाओं की स्थिति को फिर से बढ़ाने के लिये बहुत काम किया था, उनके मेहनत के कारण महिलाओं के खिलाफ अत्याचार पर काफी हद तक प्रतिबंध लग गया है। भारत सरकार ने महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण के संबंध में कई प्रभावी कानून लागू किये हैं।

''किसी भी समाज की तरक्की का मापदंड उस समाज के महिलाओं के विकास से मापा जा सकता है।''

"

नारी तू अबला नहीं, स्वयं सबकी पहचान।
अपने हक को लड़ स्वयं, तब होगा उत्थान।।

# भारतीय कृषि

अमिषा पटेल
बी.ए. (अंतिम वर्ष)

भारत देश कृषि प्रधान देश है। प्राचीन काल से लोगों ने धरती को माता का स्वरुप दिया है, जिसे हम धरती माता के नाम से जानते हैं, साथ ही हमारे जन्म से लेकर मृत्यु तक धरती माता हमें अपने गोद में पुत्र की भाँति स्थान देती है। इसी में व्यक्ति जीवन यापन करने के लिए भिन्न–भिन्न कियाकलाप एवं कृषि कार्य करता है। भारत देश की 70 प्रतिशत जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए प्रत्यक्ष रुप से कृषि पर निर्भर है। विश्व में चीन के बाद भारत ही दूसरा देश है जहाँ इतनी बड़ी संख्या में लोग कृषि कार्य करते हैं। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार है तथा देश की 50 प्रतिशत आय कृषि से ही होती है। देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र का लगभग 26 प्रतिशत योगदान है। देश के कुल निर्यातों में कृषि क्षेत्र का योगदान 1999–2000 में 43 प्रतिशत था, इसलिए कृषि को देश के अर्थव्यवस्था की रीढ़ भी कहा जाता है। प्राचीन समय से ही कृषि पर अत्यधिक जोर दिया जा रहा है। इसके संबंध में डॉ. जाकिर हुसैन ने कहा था ''पुराने समय से ही कृषि हमारे देश की जान रही है तथा अभी भी बहुत दिनों तक हमारी रगों में दौड़ने वाला और हमें शक्ति देने वाला खून रहेगा।''

कृषि राष्ट्रीय आय का मुख्य स्रोत है तथा देश की लगभग आधी आमदनी कृषि से ही होती है। कृषि न केवल राष्ट्रीय आय में वरन् विदेश व्यापार में भी उल्लेखनीय स्थान पर है। सन् 2001–02 में कुल निर्यात व्यापार में एक–तिहाई भाग कृषि क्षेत्र का था। भारतीय कृषि मानसून पर निर्भर रहा है। कृषि का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भी योगदान रहा है। वर्तमान समय में सरकार द्वारा 'आत्मनिर्भर भारत' की थीम वास्तव में सराहनीय है, परंतु जी.डी.पी. दर में गिरावट भी आयी है। भारत में उत्पादित होने वाले फसल गेहूँ, चावल, जौ, मक्का, चना, मटर, दालें, ज्वार, बाजरा, गन्ना, कपास, जूट, मूँगफली, तिलहन, तंबाकू, चाय, कहवा, रबड़, सिनकोना, गरम मसाले तथा साग–सब्जियों का उत्पादन किया जाता है। कृषि के महत्व के बारे में लाल बहादूर शास्त्री जी के शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है ''जय जवान, जय किसान''। भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का स्थान महत्वपूर्ण है। भारत में आवश्यक खाद्यान की लगभग आपूर्ति कृषि से हो जाती है। वर्तमान समय में भी बहुत बड़ी आबादी को कृषि के माध्यम से रोजगार प्राप्त होता है।

केंद्र सरकार वर्तमान में कृषि से संबंधित योजनाएँ चला रही है। प्रधानमंत्री बीमा योजना, जिसका प्रारंभ 13 जनवरी 2016 को हुआ था, किसान क्रेडिट कार्ड योजना जिसका प्रारंभ 1998 में किया गया था, महत्वपूर्ण हैं। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना की शुरुआत 29 मई 2007 को की गयी थी।

"

लोगों ने कोशिश की मुझे मिट्टी में दबाने की,
उन्हें नहीं मालूम कि ''मैं बीज हूँ'', आदत है मेरी बार–बार उग जाने की...

# IMPORTANT
# FULL FORMS

आशीष पाण्डेय
बी.एस.सी. (प्रथम वर्ष)

| | | |
|---|---|---|
| ATM | - | Automated Teller Machine |
| PAN | - | Permanent Account Number |
| SIM | - | Subscriber Identity Module |
| PDF | - | Portable Document Format |
| IFSC | - | Indian Financial System Code |
| FSSAI | - | Food Safety and Standards Authority of India |
| GOOGLE | - | Global Organizationof Oriented Group Language of Earth |
| VIRUS | - | Vital Information Resource Under Seidge |
| GPS | - | Global positioning System |
| GST | - | Goods and Service Tax |
| YAHOO | - | Yet Another Hierarchial Officious Oracle |
| LED | - | Light Emitting Diode |
| LCD | - | Liquid Crystal Display |
| DP | - | Display Picture |
| ROM | - | Read Only Memory |
| USB | - | Universal Serial Bus |
| WHO | - | World Health Organisation |
| WTO | - | World Trade Organisation |
| NASA | - | National Aeronautics and Space Administration |
| NCERT | - | National Council of Educational Research and Training |
| GNP | - | Gross National Product |
| WINDOW | - | Wide Intractive Network Development for Office work Solution |
| WI-FI | - | Wireless Fidelity |
| IMEI | - | International Mobile Equipment Identity |
| AIM | - | Ambition In Mind |
| OK | - | Objection Killed |

"

धन कमाना बुरा नहीं है, धन का दुरुपयोग करना बुरा है।

# रतनपुर
# पर्यटक स्थल

सुरेन्द्र कुमार कोसले
सहायक ग्रेड–3

रतनपुर जिला मुख्यालय बिलासपुर से उत्तर दिशा की ओर 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह कल्चुरी एवं मराठा शासन के समय छत्तीसगढ़ की राजधानी थी।

रतनपुर की स्थापना रतनराज/रत्नदेव प्रथम ने करवाया था। रतनराज कलराज के पुत्र एवं कलिंगराज के पोते थे। छत्तीसगढ़ के क्षेत्र पर विजय प्राप्त की थी, जिस वजह से उन्हें कलचुरी शाखा का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। जिसे तालाबों का नगरी भी कहा जाता था।

बिलासपुर से महल 22 किलोमीटर दूरी पर मराठो का खण्डोबा मंदिर स्थित है। मंदिर से पश्चिम की ओर दुलहरा तालाब है, जो प्रकृति से बना हुआ है। खण्डोबा एवं दुलहरा तालाब माघी पूर्णिमा के दिन मेला लगता है। वहाँ शिवलिंग मंदिर/संत रविदास एवं गुरूघासीदास का मंदिर है। वहाँ मेले के दिन बच्चों का मुण्डन संस्कार एवं मन्नत पूर्ण पूजा–अर्चना भी होता है।

खण्डोबा मंदिर के ठीक ऊपर भैरव–बाबा का मंदिर है, भैरव–बाबा को रतनपुर का द्वारपाल भी कहा जाता है। भैरव–बाबा के नीचे कोटा रोड पर जुनाशहर स्थित है। वहाँ राजाओं का किला भी है। इसी ठीक दक्षिण पूर्व पहाड़ी पर माँ लक्ष्मी देवी का मंदिर देखने योग्य है। भैरव–बाबा के बाद रतनपुर में माँ माहामाया देवी विराजमान हैं एवं कुण्ड में दर्शनार्थी नौकाविहार का भी आनंद लेते हैं। महामाया से पूरब की ओर आठाबीसा तालाब के पास से उत्तर दिशा की ओर बुढ़ा महादेव का मंदिर स्थित है। इसी के ठीक ऊपर पहाड़ी पर रामटेकरी का मंदिर स्थित है।

आठाबीसा तालाब के किनारे माघी पूर्णिमा के दुसरे दिन एक सप्ताह का मेला लगता है। मेला स्थल से लगा हुआ उत्तर की ओर गिरजाबन में महाबीर का मंदिर स्थित है। वहाँ मन्नत हेतु पूजा–अर्चना की जाती है। मेला स्थल से पूरब की ओर 5 किलोमीटर की दूरी पर खुटाघाट खारंग जलाशय स्थित है। यहाँ पर्यटकों का हमेशा आना जाना लगा रहता है– जलाशय में पर्यटक नौकाविहार का भी आनंद लेते हैं। इस बांध पर मछली पालन एवं व्यवसाय भी किया जाता है।

# हे मनुष्य !
# जरा सोचो .....

दिनेश कुमार
प्रयोगशाला सहायक (रसायन शास्त्र)

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता।
मातरं पितरं तस्मात् सर्व यत्नेन पूतयेत्।। (पदमपुराण 47/11)

माता–पिता का स्थान हमारे जीवन में सर्वोपरी है, जरा सोचें–माता और पिता अपने संतान को पालने के लिए कितना कष्ट उठाते हैं? अपने बच्चों के सपनों में कितने सपने देखते हैं? हमें कामयाब बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं, परन्तु जब हम बड़े होते हैं तो उन्हीं को भूल जाते हैं, जिनके कारण हम धरती पर आये हैं, और इस सफलता तक पहुँचे हैं। मैने सोचते–सोचते कुछ लिखने का प्रयास किया है। यह कविता केवल एक मनोरंजन मात्र के लिए नहीं है, इसे आप सभी ध्यान पूर्वक पढ़ें और चिन्तन करें –

जिसने कठिन व्रत जाप कर, मांगा तुम्हें भगवान से,
हर्षित मन मानस हुआ, तेरी एक मुस्कान से।
जिसने अपने वक्षों के, अमृत से तुमको सींचा है,
श्रमजीवी बनकर जिसने तेरे, जीवन गाड़ी को खींचा है।
जिस जननी और पिता के लिए, तु भाग्यों वाली रेखा है
तेरे लिए दुआ माँगते उन्हें, वृध्दा–आश्रम में देखा है।–2

सुकुमार पुष्प पल्लवित होने से, हृदयांगन उनका महका था,
अपने अन्दर सब राग–द्वेष छोड़, चिड़िया मन का चहका था।
मेरा बेटा, मेरा बेटा की धुन, गृह आंगन में बजती थी,
आँखों का तारा कहती थी, आँखों में सपने सजाती थी।
विदीर्ण कर दिया तुमने उनको, क्या यही करम का लेखा है?
तेरे लिए दुआ माँगते उन्हे, वृध्दा–आश्रम में देखा है। –2

नयन–पाश, यौवन में बंधकर, तुमने खुद को सुला दिया,
माँ के निश्छल प्रेम की धारा, मोह में तुमने भुला दिया।

प्रेम मोह में फँसकर तुम कर्त्तव्यों से विरक्त हुए,
सांसारिक सुख सुविधाओं में, हद से ज्यादा आसक्त हुए।
क्या इन्ही दिनों के लिए तु अपने, माँ–बाप का राजा बेटा है ?
तेरे लिए दुआ माँगते उन्हे, वृध्दा–आश्रम में देखा है। –2
तेरा भी एक बेटा है, जिस पर जान न्योछावर करता है,
दिन–रात परिश्रम करके तु, उसके सपनों को पूरा करता है।
तेरे पद्चिन्हों पर चलकर तुझको आश्रम दिखलायेगा,
कर्त्तव्य–विमुख होकर तुझको कर्त्तव्य पालन सिखलायेगा।
क्या उस दिन उसको आत्मसात कर, बोलोगे मेरा चहेता है ?
तेरेलिए दुआ माँगते उन्हे, वृध्दा–आश्रम में देखा है। –2

माँ–पिता के कारण ही हमको, इस जीवन का आधार मिला,
बड़ा भाग्यशाली हैं वो, जिनको है इनका प्यार मिला।
इसलिए सुनो हे मनुज सुनो, अपने माँ  का सम्मान करो,
पिता पर अपने गर्व करो, आदर्शों का गुणगान करो।
माँ–पिता से बढ़कर, दुनिया में, और कोई ना दूजा है,
माँ–पिता की सेवा से बढ़कर, ना कोई जगत में पूजा है।
माँ–पिता  को सुख देने वाले को, ईश्वर देता ही देता है।
तेरे लिए दुआ माँगते उन्हे, वृध्दा–आश्रम में देखा है। –2

दो चीजो का अंदाजा आप कभी नहीं लगा सकते
माँ की ममता और पिता की क्षमता।

# राष्ट्रीय पर्व

# जनजागरुकता रैली

# महत्वपूर्ण दिवसों पर आयोजित कार्यक्रम

विश्व जनसंख्या दिवस

विश्व जनसंख्या दिवस

हिन्दी दिवस

राष्ट्रीय युवा दिवस पर कार्यक्रम व प्रतियोगिताएँ

## शिक्षक दिवस कार्यक्रम

## महात्मा गाँधी की 150 वीं जयंती

## अभिभावक शिक्षक सम्मेलन एवं प्रकाश छात्रवृत्ति वितरण

## छात्र संघ गठन व शपथ ग्रहण

## व्याख्यान आयोजन

## गोद ग्राम मेण्ढारी में श्रमदान

# वार्षिक उत्सव एवं प्रतियोगिता

# कैरियर काउंसिलिंग, गाइडेंस एवं उद्यमिता विकास पर एक दिवसीय संगोष्ठी सह कार्यशाला

# रेड रिबन क्लब द्वारा आयोजित प्रतियोगिता

# प्रायोगिक कार्य

# भू-वैज्ञानिकों द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर प्रदर्शनी

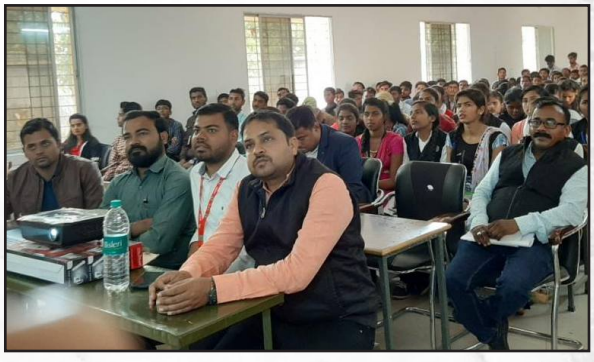

# राष्ट्र गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग।
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे;
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।।

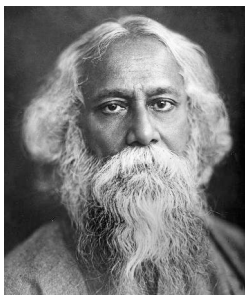

रविन्द्रनाथ टैगोर

# छत्तीसगढ़ का राजगीत

अरपा पैरी के धार, महानदी हे अपार
इंदरावती हा पखारय तोर पईयां
महूं पांवे परंव तोर भुँइया
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

सोहय बिंदिया सहीं, घाट डोंगरी पहार
चंदा सुरूज बनय तोर नैना
सोनहा धाने के अंग, लगुरा हरियर हे रंग
तोर बोली हावय सुग्घर मैना
अंचरा तोर डोलावय पुरवईया
महूं पांवे परंव तोर भुँइया
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

रयगढ़ हावय सुग्घर, तोरे मउरे मुकुट
सरगुजा अउ बिलासपुर हे बइहां
रयपुर कनिहा सही, घाते सुग्घर फबय
दुरूग बस्तर सोहय पैजनियाँ
नांदगांव नवा करधनियाँ
महूं पांवे परंव तोर भुँइया
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा

# हमारा निवेदन

## चलो धरती बचायें पर कैसे?

Suraj Graphix # 7415157000

शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय, वाड्रफनगर
ज्ञानम् अनन्तम्

# शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय, वाड्रफनगर

जिला - बलरामपुर-रामानुजगंज (छ.ग.)

Web : www.govtcollegewadrafnagar.ac.in

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Email : ranidurgawati001@gmail.com